WINNER
नीली

नीली

नंदिनी कुमार

उन सभी के लिए जो अपनी ज़िंदगी से सवाल करते हैं।

ताला

यह बात वहाँ शुरू होती है जहाँ पर बाक़ी सब कुछ ख़त्म होने लगा था। पर उसकी भनक अभी तक नीली को नहीं थी। वो कॉलेज की ट्रिप का बहाना कर के विक्रम से मिलने दिल्ली आई थी। विक्रम के साथ ही एक महँगे से होटल में रह रही थी। दोनों दिन भर सोते और फिर दोपहर में उठ कर खाना ऑर्डर करते थे। खाना आते ही जल्दी जल्दी खाते और फिर सो जाते। शाम को 6 बजे फिर आँख खुलती तो एक दूसरे को जी भर के प्यार करते और फिर ठीक 8 बजे तैयार होकर घूमने निकल जाते। वापिस आते आते सुबह के 3 – 4 तो बज ही जाते थे। ऐसा पूरा एक हफ़्ता चलता रहा, जिसके बाद विक्रम सिंगापोर चला गया और नीली उसकी ख़रीदी हुई फ़्लाइट की टिकट से वापिस अपने घर, देहरादून आ गई।

यह सब सुनने में ऐसा लग रहा है, जैसे उन दोनों का प्यार परवान चढ़ रहा था। लेकिन उस दिन के बाद ना कभी नीली ने विक्रम से बात करी और ना कभी विक्रम ने नीली को देखा। यह सब बस ऐसे ही ख़त्म हो गया जैसे रिश्ते अक्सर ख़त्म हो जाते है। एक दिन लगता है सब ठीक है और फिर अचानक मिलना जुलना, बात चीत, चिंता, लगाव, घबराहट, ग़ुस्सा और ना जाने ऐसे कितने खट्टे मीठे अनुभवों को ताला लग जाता है।

5 साल बाद

जनवरी का महीना था, लग रहा था सर्दियाँ बस ख़त्म होने वाली हैं। पहाड़ों से आती हुई ठंडी हवाएँ भी बस सुबह और शाम में सिमट कर रह गई थी। दिन गर्म हो चले थे और रंग बिरंगी तितलियाँ अब अक्सर फूलों पर बैठी दिखने लगी थी।

दोपहर में लोग अपने घरों की छतों पर धूप के पीछे दौड़ने के बजाय सज सवर कर बाहर निकलने लगे थे। जो लोग सालों से देहरादून में रह रहे थे, ज़्यादातर पलटन बाज़ार की ओर जाते थे। यह तफ़री करने के लिए अच्छा बाज़ार था। ना ज़्यादा बड़ा और ना बहुत छोटा। एक दम ठीक साइज़ का। यहाँ की दुकानों में भी हर दाम की चीज़ें मिल जाती थी, महंगी से महंगी और सस्ती से सस्ती। हर 5 - 6 दुकानों को छोड़ कर खाने पीने की एक आध दुकानें थी। कहते हैं बहुत सालों पहले, इस सड़क से अंग्रेज़ों की पलटन निकला करती थी और उन्हें कुछ ना कुछ बेचने के लिए लोग यहाँ आ कर खड़े हो जाते थे। देखते ही देखते पूरा बाज़ार जम गया।

पलटन बाज़ार के ठीक सामने, जो सड़क जाती है, उसका नाम राजपुर रोड है। यह देहरादून का नया बाज़ार है। इतना नया कि अगर आप दो महीने बाद देहरादून आएँ तो दुकानों के नाम, खाने पीने के अड्डे, यहाँ तक की पेट्रोल पम्प तक बदले हुए पाएँगे। खाने पीने की यहाँ भी कोई कमी नहीं है। बस खाना कई गुना ज़्यादा महंगा और कई गुना ज़्यादा सजा हुआ मिलता है। तफ़री मारने की यह भी बहुत अच्छी जगह है, ख़ासकर उन लोगों के लिए जिन्हें थोड़े एकांत की तलाश है। आशिक़, अकेली लड़कियाँ, ग़ुस्से से भरे माँ बाप, प्यार में पागल प्रेमी, जो भी हो, इस सड़क का पूरा इस्तेमाल करता है। और करे भी क्यूँ नहीं, 4 - 5 किलॉमेटर के बाद ही ये सड़क साल के लम्बे लम्बे पेड़ों के एक सुंदर से जंगल के बीच खो जाती है और फिर दूर पहाड़ों में ही निकलती है। देहरादून वालों के बीच कहावत है कि अच्छे और बुरे वक़्त में जो राजपुर नहीं गया, वो देहरादून वाला नहीं।

आज का दिन बहुत सुहाना था। सुबह से धूप खिली थी। हवा में नएपन की ख़ुशबू थी, सब कुछ चमक सा रहा था - बोगनविलिया के गुलाबी फूल, हरी हरी घाँस और साल के बड़े बड़े पत्ते। इसी सड़क पर एक सफ़ेद रंग की बड़ी सी गाड़ी दौड़े जा रही थी। अंदर बैठी तीन बहनों की तरह एकदम मस्त और आज़ाद।

“नीली, तेरी शादी आख़िरकार पक्की हो ही गई” प्रियो हँसते हुए बोली।

“मुझे तो पता ही था। कभी देखा है अभय को। कैसे नीली नीली करता रहता है” सरस अपने फ़ोन में टाइप करती हुई बोली।

नीली, जो गाड़ी चला रही थी, बस हँस कर रह गई। उसके आगे कुछ ना बोली।

उसकी दोनों बड़ी बहने, जो सोचती थी कि बिना शादी करे ही नीली इस साल तीस साल की हो जाएगी, बहुत ख़ुश थी।

उसे इतने सालों बाद कोई लड़का पसंद आया था। और पसंद भी क्या, अब तो अभय ने शादी के लिए नीली का हाथ भी माँग लिया था। सब कुछ इतना जल्दी हो रहा था कि नीली को पता भी नहीं चला, कब उसने हाँ कहा और कब शादी की तरीक निकल गई।

'अभय अच्छा लड़का है, मुझे ख़ुश रखेगा' हाँ कहते हुए नीली के अंदर यही आवाज़ आई थी। और वो लोग दो साल से साथ भी थे। घर वाले उनके रिश्ते से ख़ुश थे और किसी ने कोई ऐतराज़ भी नहीं किया था।
"उस विक्रम के भूत से आख़िरकार तू बाहर आ ही गई। बाई गॉड ! हम तो सोच रहे थे तू कभी उस दलदल से निकलेगी भी की नहीं" प्रियो ने हँसते हुए नीली से कहा।

विक्रम का नाम सुनते ही नीली के चहरे का रंग एकदम ऊड़ गया।

"बॉटल खोलूँ?" सही टाइम पर सरस ने अपने पर्स से बीयर की छोटी छोटी बोतलें निकाली और सबके हाथ में थमा दी।

"चीयर्स" प्रियो को आँखें दिखाती हुई वो ज़ोर से बोली।

एक हाथ से अपनी बॉटल उठाते हुए नीली ने भी 'चीयर्स' किया और बॉटल नीचे रख दी।

"अरे तू पी नहीं रही?" सरस ने एक लम्बा सा घूँट भरते हुए कहा।

"बाबू सामने देखो"

सामने चौराहे पर पुलिस की दो गाड़ियाँ खड़ी थी और कुछ पुलिस वाले आने जाने वाली गाड़ियों को रोक कर तलाशी ले रहे थे। सरस ने फटाफट सारी बोतलें सीट के नीचे डाल दी।

नीली ने गाड़ी धीमी करी और एक मोटे से अधेड़ उम्र के पुलिस वाले के सामने आकर ब्रेक दबा दिए।

"हाँ जी मैडम, कहाँ जा रही है?" पुलिस वाले ने नीली की खिड़की के अंदर झाँकते हुए कहा।

"बस ऊपर तक, ऐसे ही, घूमने।" 'ऊपर' शब्द पहाड़ पर बसे एक छोटे से शहर मसूरी की तरफ़ जाने को कहा जाता था।
"आज कल ऐक्सिडेंट बहुत हो रहे हैं। लोग दारू पी कर पहाड़ों पर चल देते हैं" पुलिस वाले ने गाड़ी के अंदर से आती महक को टटोलते हुए कहा।

"जी" नीली सामने देखते हुए बोली।

"बुरा ना माने तो आप सब गाड़ी से बाहर निकलेंगी? आपका लाइसेन्स और गाड़ी के पपेर्स देखने हैं।"

“पर क्यूँ? हमने क्या किया?” सरस ने अपनी तरफ़ का शीशा नीचे करते हुए कहा।

“ऐसा है मैडम, आपकी गाड़ी बहुत तेज़ जा रही थी। ओवरस्पीडिंग तो समझती हैं ना?”

“ऐसा कुछ नहीं है। आप ज़बरदस्ती हमें परेशान कर रहे हैं” सरस की आवाज़ ऊँची हो गई।

“देखिए, हमें मत समझाइए” पुलिस वाला भी ग़ुस्से में बोला।

इससे पहले कि सरस पुलिस वाले की आवाज़ से ऊँची आवाज़ में बोलती, प्रियो ने बड़े प्यार से पुलिस वाले को देखते हुए कहा, “सरस, तुम वक़ील हो ये इनको तो नहीं पता ना। इन्हें भी तो अपना काम करना है।”

अपनी आँखें पुलिस वाले पर ही रखते हुए वो आगे बोली, “ये दिल्ली के वक़ील भी ना। बस हर चीज़ के क़ायदे क़ानून पूछते रहते है।

पुलिस वाला ठिठक गया।

“आप बताइए, कौन से पपेर्स देखने हैं? हमारे ID भी चाहिए होंगे ना?”
“जी, जी रहने दीजिए, औरतों को परेशान करना हमें अच्छा नहीं लगता। बस गाड़ी थोड़ी तेज़ जा रही थी इसलिए ही रोका था। आप गाड़ी थोड़ी धीरे चलाइएगा।” पुलिस वाले की आवाज़ में थोड़ी हड़बड़ाहट आ गई।

“पक्का?” प्रियो ने फिर से से पूछा।

“जी पक्का” पुलिस वाला मुस्कुराने की कोशिश कर के रह गया, “चलिए जाइए।”

नीली ने गाड़ी स्टार्ट करी और एक्सिलेरटर पर ऐसा पैर रखा कि गाड़ी आँधी की तरह वहाँ से ऊड़ गयी। पुलिस वाला एक पैर से दूसरे पैर पर अपना वज़न तोल कर स्कूटर पर आते हुए बच्चों के पीछे पड़ गया।

“वाह प्रियो! तूने तो आज बचा लिया। पापा की गाड़ी जपत हो जाती नहीं तो” सरस अपनी सीट के नीचे से बोतलें निकालती हुई बोली।

“तेरे ग़ुस्से ने तो आज फँसा ही दिया था”, प्रियो ने सरस को आँखें दिखाते हुए जवाब दिया।

“हाँ और तूने झूठ बोल कर बहुत अच्छा किया ना। वक़ील? और कुछ नहीं मिला था तुझे?” नीली अब भी हँस रही थी।

“पुलिस वाले या तो वकीलों से डरते हैं या नेताओं से। अब हम तीनों में से नेता तो कोई नहीं लगता ना।”

तीनो ने ज़ोर से ठहाका लगाया और पूरी गाड़ी उनकी हँसी से गूँज उठी। रेडीओ पर गाने चल रहे थे। शहर के शोर गुल से दूर अब सड़क जंगल से होती हुई पहाड़ चढने लगी थी। दूर दूर तक बस इक्का दुक्का गाड़ियाँ ही होंगी। नीली ने गाड़ी धीमी कर दी। अपनी बीयर की बोतल ले कर अब वो एक दो घूँट पीने लगी। गाड़ी में चलते हुए गाने, प्रियो और सरस की बातें और बाहर से आती आवाज़ों के बीच नीली का मन थोड़ी देर के लिए एकदम शांत हो गया। ऐसा लगा जैसे वो किसी और जगह हो। ऐसी जगह जहाँ कोई फ़िकर, कोई चिंता नहीं थी।

“अरे भाई सन रूफ़ तो खोल दो” सरस की आवाज़ नीली को वापिस खींच लाई और बिना कुछ सोचे उसके हाथ ने सामने लगे बटन को दबा दिया।

“ये हुई ना बात!” प्रियो अपने बाल बाँधती हुई बोली।

एक एक कर के प्रियो और सरस दोनों अपनी सीट पर खड़े हो कर गाड़ी की खुली छत से बाहर निकल गए।

“भैंस की आँख” ठंडी हवा में जाते ही सरस चिल्लाई।

“नीली, दौड़ा दे अपनी घोड़ी” प्रियो ने हँसते हुए कहा।

फिर क्या था, नीली ने गाड़ी दौड़ा दी और सरस के मुँह से मानो गालियों की फुहार छूट गई। नीली और प्रियो हँसते रहे। धीरे धीरे सड़क पर गाड़ियाँ बढ़ने लगी और सामने मसूरी नज़र आने लगा। बिना बोले ही नीली ने गाड़ी धीमी करी और फिर जगह देख कर गाड़ी वापिस घुमा ली। इस मोड़ से आगे सिर्फ़ दिल्ली वाले जाते थे। देहरादून वाले चुपचाप गाड़ी वापिस मोड़ लेते हैं।

चिड़िया

कर्नल साहनी की दो बेटियाँ थी जब नीली ने जन्म लिया। कहते हैं यह ख़बर सुन कर नीली की नानी बेहोश हो गई थी। सब ने कर्नल साहब को सांत्वना दी, “एक और लड़की! कोई बात नहीं। शायद भगवान को यही मंज़ूर है, शायद आपके नसीब में लड़के का सुख है ही नहीं।”
जिसके जवाब में कर्नल साहब बोले, “हम इंसान है, और बस यही कामना करते हैं कि हमारे बच्चे भी इंसान पैदा हो।”

अब इसे फ़ौज की ट्रेनिंग कहो या उनका अपना मिज़ाज, उन्होंने कभी अपने बच्चों को लड़कियों या बेटियों की तरह पाला ही नहीं। अगर उनके तीन बेटे होते तो वो भी ऐसे ही होते। वो भी बेझिझक जो मुँह में आए कह देते, ज़रूरत पड़ने पर हाथा-पाई कर लेते, किसी कोने में छुप के सिगरेटें पी रहे होते या फिर शराब पी कर चोरी छुपे घर आते।

उनकी बीवी, रूप कौर कर्नल साहब से थोड़ी सी अलग थी। दुनिया उनकी बेटियों को देख कर क्या बातें बनाती है, अच्छी तरह जानती थी। और कर्नल साहनी से थोड़ा सा अलग, उन्हें ये बातें बुरी भी लगती थी। लेकिन जब बाप बेटियों पर जान छिड़कता हो, तो माँ बोल ही क्या सकती थी?

“अरे मेरे बच्चों, तुम आ गए?” प्रियो ने घर का दरवाज़ा खोला तो सामने सोफ़े पर कर्नल साहनी बैठे हुए थे।

“पापा, आप सोए नहीं अभी तक?” प्रियो अंदर आ कर अपने पापा के साथ, सोफ़े पर बैठ गई।

“टाइम तो देखो। वेरी बैड पापा” सरस घर में क़दम रखते ही बोली। सरस की नक़ली डाँट सुन कर नीली, जो पीछे पीछे ही आ रही थी, हँसने लगी।

“अरे मैं उस पिक्चर का इंतज़ार कर रहा था” अपने आप को बचाते हुए साहनी साहब बोले।

“वो फ़ौजी वाली?”

“हम दोनो” कर्नल साहनी ने सरस को ठीक करते हुए कहा।

“उस मूवी के बाद ही आपने फ़ौज में जाने का फ़ैसला किया था” तीनो एक साथ बोली तो कर्नल साहनी ज़ोर से हँस पड़े।

“बिलकुल सही मेरी औलदों। चलो बैठ जाओ अपने बाप के साथ। नीली, बेटा मेरा ड्रिंक रीफ़िल कर दे।”

नीली ने पापा के हाथ से ग्लास लिया और बार में जा कर विस्की की बोतल खोलते हुए

बोली,
“कोई और है विस्की वाला?”

प्रियो और सरस दोनों ने अपना अपना हाथ खड़ा कर दिया।

“नलायको” नीली ने कैबिनेट से ग्लास निकाले और उनमे विस्की डालने लगी।

पिक्चर शुरू हो गई और तीनो बेटियाँ अपने पिता के साथ दुबक कर सोफ़े पर बैठ गयी।

“यू हैव बिन ड्रिंकिंग?” पापा ने सवाल किया तो तीनो ने हँसना शुरू कर दिया।

“येस पापा” नीली ने धीमी सी आवाज़ में कहा।

“ब्लडी! मेरे बिना?”

“ये नक़ली ग़ुस्सा तुम्हें सूट नहीं करता” रूप कौर अंदर आते हुए बोली, “बेटियों को तो बिगाड़ ही चुके हो। अब इसकी शादी में थोड़ी इज़्ज़त रख लेना।”

“तू इधर आ के बैठ जा राज्जो” कर्नल साहनी ने अपनी बीवी को भी सोफ़े पर खींच लिया।

“हमारी इज़्ज़त तो इसी में है कि हमारी बेटियाँ ख़ुश रहे।”

जवाब में तीनो ने सर हिलाया।

“और?” रूप ने कर्नल साहब को चिढ़ाते हुए पूछा।

“और जहाँ रहे अपनी मर्ज़ी से रहे।”

“क्यूँकि?” प्रियो ने अपने पापा को गले से लगाते हुए पूछा।

“क्यूँकि उनके बाप का राज है”

सब हँस पड़े।

उसके बाद कर्नल साहब ने टी वी चला दिया और पूरा कमरा टीवी से आ रही मधम रोशनी में डूब गया। माँ – बाप और उनके तीन बच्चे सोफ़े पर बैठ कर उसी तरह पिक्चर देखने लगे जैसे बचपन से देखते आए थे। बीच बीच में कर्नल साहब अपनी ज़िंदगी के क़िस्से सुनाने लगते जो हमेशा से सुनाते आएँ है।

कर्नल साहनी की बातें सुनते सुनते सबसे पहले रूप कौर को नींद आई और फिर बाक़ी तीनों को।

पिक्चर ख़त्म हो जाने पर जब कर्नल साहनी ने अपने चारों ओर देखा कि सब सो चुके हैं

तो थोड़ा उदास हुए और फिर बाहें फैला कर सबको अपने सीने से चिपका लिया।

इस अंधेरे में जब उन्होंने नीली को देखा, तो उन्हें वो दिन याद आया जब वो पैदा हुई थी।
“मेरी चिड़िया” उसके छोटे से होंठ देखते हुए उन्होंने कहा था।

‘नीली चिड़िया ज़िंदगी में ख़ुशियाँ लाती है’ और यह मेरी ‘ब्लू बर्ड’ है, मेरी ‘नीली’।

अब नीली के शादी होने वाली थी। और वो अपने पिता के घर से उड़ने को तैयार थी।

तमाशा

शादियाँ तो हमेशा से ही होती आई हैं और शादी वाले घरों में तमाशों की भी कोई कमी नहीं रही है। कभी कोई रिश्तेदार इतना बीमार पड़ जाता है कि डॉक्टर जवाब दे देता है और कभी लड़की का शादी करने का सही सा मन नहीं हो रहा होता, फिर वो कुछ बोले या ना बोले, ये बात उसके चेहरे पर साफ़ दिख जाती है। लेकिन बात ज़्यादातर कड़वी दहेज और उसके नाम पर लेन देन से ही होती है। अपनी दो बेटियों की शादी में कर्नल साहब ने एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी थी। और यह बात सब जानते थे।

नीली की शादी अब कुछ ही दिन में थी और इनमें से कोई भी बात अभी तक कर्नल साहनी के सामने नहीं आई थी, जिसकी वजह से वो बहुत ख़ुश थे।

“बेटा, अभय की फ़्लाइट कितने बजे की है?” नीली की माँ धूप में बैठी अपने फ़ोन पर विडीओ गेम खेलती हुई बोली।

“दो बजे का अराइवल है शायद” नीली, जो धूप में लेटी हुई किताब पढ़ रही थी, बोली।

“तो तू यह क्या कर रही है अभी तक?”

“मतलब?”

“अरे! उसे लेने जा नहीं रही?”

“वो टैक्सी कर के आ जाएगा माँ”

“पर उसे ख़ुशी टैक्सी वाले को देख कर होगी या तुझे?”

नीली अपनी माँ का चहरा देख कर हँस पड़ी, “अब समझ आया, पापा को किसने बिगाड़ा है।”

नीली की माँ एक पल के लिए शर्मा गई, फिर नक़ली ग़ुस्सा दिखाते हुए बोली, “हम तो क्या क्या नहीं करते थे एक दूसरे के लिए और एक ये हैं कि पति को लेने ऐरपोर्ट भी नहीं जा सकते।”

“अभी पति बना नहीं है वो मेरा”

“हाँ हाँ तो इसमें ग़ुस्सा होने वाली क्या बात है? सच में नीली, तुझे मैं नहीं समझ सकती”

“ग़ुस्सा नहीं हूँ माँ, जा रही हूँ,” नीली ने अपने हाथ खड़े करते हुए कहा।

“कौन कहाँ जा रहा है?” प्रियो अपना योगा मैट ले कर घर के अंदर आ ही रही थी कि उन दोनों की बात सुनने के लिए रुक गई।

“नीली जा रही है, अभय को लेने” नीली की माँ ने जवाब दिया।

“चल मैं भी चलती हूँ” प्रियो अपने पजामे में ही कार में बैठ गई।

थोड़ी देर में गाड़ी सड़क पर थी। ऐरपोर्ट यहाँ से तक़रीबन एक घंटे की दूरी पर था।

“तेरे पास लाइटर है?” प्रियो ने गाड़ी के डैशबोर्ड में रखे एक डॉक्युमेंट फ़ोल्डर से सिगरेट निकालते हुए पूछा।

“ये अभी तक यहीं है? तूने छोड़ी नहीं?” सिगरेट देखते ही नीली बोली।

“अरे छोड़ दी है। ये तो इमर्जन्सी की है। पापा ने देख लिया ना तो गोली से उड़ा देंगे” प्रियो ने लाइटर के लिए हाथ आगे बढ़ाया।

नीली ने अपने पर्स की तरफ़ इशारा कर दिया।

“वाह मेरी जान तूने कब से पीनी शुरू कर दी?”

“जब से ज़िंदगी में स्ट्रेस बढ़ गया”

दोनों हँस पड़े और एक एक सिगरेट जला कर पीने लगे। पता ही नहीं चला कब ऐरपोर्ट आ गया।

स्पीकर पर एक औरत कुछ बोल रही थी लेकिन कुछ समझ नहीं आ रहा था।

गाड़ी पार्किंग में खड़ी कर नीली ने अपने पर्स से पफ़्यूम निकाला और प्रियो को पकड़ा दिया।

प्रियो ने सर से पैर तक तसल्ली से स्प्रे किया और फिर नीली को दे दिया। नीली ने पफ़्यूम अपने पर्स में रख दिया।

“अभय को पता है?”

नीली ने हाँ में सर हिला दिया। ऐसी कोई बात नहीं थी जो अभय को ना पता हो। बस एक बात के।

दो साल पहले

“कर्नल साहब ऐसी पार्टी आपके अलावा कोई नहीं दे सकता, क़सम से” खन्ना साहब के हाथ में दो विस्की से ग्लास थे। वो कभी एक से एक घूँट भरते तो कभी दूसरे से।

“बकवास मत कर और विस्की पिला खन्ने,” कर्नल साहनी ने गैस के ऊपर पकते हुए मीट को देखते हुए कहा।

‘ये साला कब पकेगा?’ अपने आप से बोलते हुए उन्होंने खन्ना के हाथ से एक विस्की का ग्लास ले कर लम्बा सा घूँट भरा।

“तूने अच्छा रिवाज़ बनाया है कर्नल” मेजर शर्मा ट्रे में झूठे ग्लास ले कर किचन में दाख़िल हुए। पसीने से लतपत, वो सारे ग्लास सिंक में डाल कर फटाफट सीख में मीट के टुकड़े लगाने लगे।

“मैं कहता हूँ ये रिवाज हर घर में होना चाहिए” कर्नल साहनी ने कढ़ाई में करछी चलाते हुए कहा।

बाहर लिविंग रूम में सारी औरतें बैठ कर तंबोला खेल रही थी। एक कोने में एक मिनी बार लगा हुआ था जिसमें सरस खड़ी हुई थी। एक हाथ में रम और दूसरे में विस्की की बोतल ले कर वो आँटियों को लालच दे रही थी।

बीच बीच में कोई आदमी, जो इनमे से किसी आंटी का पति था, कुछ खाने को ले कर आता और फिर थोड़ी गपशप कर के वापिस किचन में चला जाता।
“यार ये पचास पचास रुपए के लिए कितना झगड़ रही है” प्रियो, जो तंबोला खिला रही थी, बार में आते ही बोली।

“दारू पियो और मस्त जियो” सरस ने प्रियो के हाथ में एक ग्लास थमा दिया।

“नीली” प्रियो ने नीली को आवाज़ लगाई, “वहाँ कोने में बैठने से अच्छा है तंबोला का अगला राउंड खिला दे।”

नीली उठ कर अंदर चली गई।

“ये कब ठीक होगी यार” सरस ने प्रियो के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

“वो साला तो निकल लिया और ये नीली अटक गई” प्रियो ने सरस को देखते हुए कहा।

“उसको गंजा कर के ना, चप्पल गीली कर के मरूँगी” सरस का चहरा ग़ुस्से से तमतमा उठा।

“हम कुछ नहीं कर सकते सरस। अब जो होगा अपने आप होगा” उस ग्लास में जो भी

था, पूरा गटक कर प्रियो तंबोला का अगला राउंड खिलाने चली गई।

‘तूने संदीप से शादी करते वक़्त भी यही कहा था प्रियो’ सरस अपने आप से बोली और फिर टेबल पर ग्लास सजाने लगी।

तभी दरवाज़ा खुला और दो आदमी, औरतों के बीच में से होते हुए कमरे के पीछे, एक कोने में आ कर खड़े हो गए। उनमें से एक सरस का पति विकी था। उसने सरस को देखते ही आँख मारी और जवाब में सरस ने उसे एक फ़्लाइंग किस दे दिया। उसने ध्यान नहीं दिया कि उसके पीछे कोई खड़ा है, जिसको देखते ही वो शर्मा गई।

“बेटा कॉक्टेल में रम थोड़ी कम डाल नहीं तो इन आँटियों को तुझे ही घर छोड़ने जाना पड़ेगा”, सरस की माँ, रूप कौर बार के पास आते ही बोली।

सरस अभी भी शरमाई हुई थी इसलिए कुछ ना बोली। उसकी माँ ने उसकी आँखो को देखा और फिर उसकी आँखें जो देख रही थी उसको, “वो लड़का कौन है?”

“विकी के बचपन का दोस्त है माँ, अभय”

“क्या यह वही अभय है?”

“हाँ-हाँ वही है, इसके सामने अभी कुछ नहीं कहना,” सरस ने अपनी माँ को समझाते हुए कहा।

“वो हैंडसम बंदा कौन है?” प्रियो तंबोला का एक राउंड खिला कर वापिस अपना ग्लास भरने आई थी।

“सब उसी के बारे में पूछ रहे हैं” सरस ने हँसते हुए कहा।

“वो अभय है”

“ओह! वो वाला अभय?”

“हाँ” सरस ने आँखें बड़ी कर के अपनी माँ और बहन को दिखाई, जिसका मतलब था कि अब चुप हो जाओ।

विकी, जिसने एक बहुत फ़ैशनबल सूट पहन रखा था, बार के पास खड़ी औरतों के पास आ कर खड़ा हो गया। सरस ने उसे फट से गले से लगा लिया।

उनके प्यार और प्यार से निकली सभी हरकतों को देख कर यह साफ़ दिखाई दे रहा था कि उनकी शादी को बस कुछ ही महीने हुए थे।

“आज मेरी जान क्या बना रही है?” विकी ने सरस के बनाए हुए कॉक्टेल को देखते हुए कहा।

“कुछ नहीं बस रम के बेस के साथ थोड़ा इक्स्पेरिमेंट कर रही हूँ” सरस ने विकी को रंग बिरंगे ड्रिंक्स दिखाते हुए पूछा, “तुम क्या पियोगे?”

“हम तो विस्की वाले हैं।”

“और अभय क्या पिएगा? और वो कैसा है? आज कैसे निकल गया घर से?” सरस अपने पति से पूछने लगी।

“निकला नहीं, ज़बरदस्ती निकाला मैंने। कब तक ग़म मनाएगा। जो होना था हो गया।”

“क्या हो गया?” नीली हाथ में सीख कबाब की बड़ी से ट्रे ले कर खड़ी थी।

“अरे कुछ नहीं। वो अभय आया है”

“अभय कौन?”

“विकी का दोस्त अभय और कौन”

“जिसकी शादी टूट गयी?” नीली के मुँह से निकला।

“टूटी नहीं, होते होते रह गई।” विकी ने प्लेट में से कबाब उठाते हुए कहा, “और फिर तुम लोगों को इतना इंटरेस्ट क्यूँ आ रहा है इन सब बातों में?”

विकी अपना ग्लास ले कर वहाँ से चला गया।

नीली की नज़र अभय पर ही रुक गयी थी। अभय एक कोने में खड़ा हुआ था। लम्बे क़द काठी का साँवला सा लड़का। काली जींस और ग्रे टी शर्ट में वो बहुत अच्छा लग रहा था। उसके बाल थोड़े घुंघराले थे, जिसे उसने बेहद सफ़ाई से सेट कर रखा था। उसकी बड़ी बड़ी आँखें एकदम शांत थी।

“क्या देख रही है?” सरस ने नीली की पीठ थपथपाते हुए कहा।

नीली ने आँखे नीचे कर ली और ट्रे ले कर तंबोला खेलती हुई आँटियों की तरफ़ चल पड़ी।

उसने आँखें चुरा कर फिर से अभय की तरफ़ देखा जो अब उसी को देख रहा था। वो शर्मा गई। उसके मन में अजीब सी घबराहट हुई। ऐसा लगा मानों उसका दिल अभी बाहर निकल आएगा। सीने में अजीब सा दर्द होने लगा। उसने आँख उठा कर अभय की तरफ़ देखा। वो वहाँ नहीं था!

ना जाने क्यूँ उसे बुरा सा लगा। ऐसा क्यूँ हो रहा था?

जब ट्रे में सजाए हुए सारे सीख कबाब ख़त्म हो गए तो नीली खाली ट्रे ले कर प्रियो के

पास जा कर खड़ी हो गई।
“वॉच योर वाइफ़, ऐट थर्टी फ़ाइव” प्रियो बोझिल सी आवाज़ में बोली और ये सुनते ही कुछ आँटियों ने अपनी टिकट पर नम्बर काट दिए।

“लड़कियों” विकी की आवाज़ पर दोनों बहनों ने मुड़ कर उसकी तरफ़ देखा तो वो अभय के साथ खड़ा था।

“इनसे मिलो, ये मेरे बचपन का दोस्त अभय है” अभय ने हँस कर सर हिलाया पर उसकी नज़र नीली पर ही थी।

“थैंक गॉड! कोई तो हमारी उम्र का आया” प्रियो ने अभय के गले लगते हुए कहा, “कैसे हो अभय, बहुत कुछ सुना है तुम्हारे बारे में”

“आइ होप कुछ बुरा नहीं” अभय ने हँस कर कहा। वो अभी भी नीली को ही देख रहा था।

“सब कुछ अच्छा” प्रियो ने नीली को देखा, जो अभी भी शर्मा रही थी।

“ये मेरी बहन नीली है। हमेशा ये ऐसे नहीं शर्माती”

नीली का चहरा एकदम लाल हो गया।

“हेल्लो नीली” अभय ने नीली को देखते हुए कहा।

“हेल्लो” नीली ने अभय की आँखों में आँखे डालते हुए जवाब दिया। और फिर नीचे देखने लगी।

“ये तो शर्माती रहेगी। तुम क्या पियोगे अभय?”

“विस्की” अभय के आँखें प्रियो को एक पल के लिए देख कर फिर से नीली पर जा टिकी।

“वाह! तुम तो हमारी पार्टी के निकले” प्रियो ने अभय के कंधे पर हाथ रखा और उसे बार की तरफ़ ले कर चल पड़ी।

विकी ने नीली के कंधे पर हाथ रखते हुआ कहा, “बहन, तुझे क्या हो गया?”

“कुछ भी तो नहीं!” उसने विकी को कोनी मारते हुए कहा, “जैसा तुम सोच रहे हो वैसा कुछ भी नहीं है। ठीक है?”

“यह तू मुझे समझा रही है या अपने आप को?” विकी ने हँसते हुए कहा।

नीली और विकी भी थोड़ी देर में बार के पास पहुँच गए जहाँ सरस, अभय से बात कर रही थी और प्रियो सबके ग्लास में बराबर बराबर विस्की डाल रही थी।

तभी कर्नल साहनी किचन से बाहर आए और एक कटोरी पर चम्मच बजाते हुए बोले, “माई लेडीज़, खाना बन गया है। आप में से जो भी चाहें आकर इसका आनंद ले सकती हैं”

सभी औरतें हँसने लगी। किचन से सभी आदमी बाहर आने लगे और अलग अलग पकवान ला कर टेबल पर सजाने लगे। शर्मा अंकल का स्पेशल कीमा मटर, खन्ना की दाल मखनी, रावत जी की कुरकुरी भिंडी, बाज़ार से लाई गई बिरयानी और ना जाने क्या क्या।

पूरा घर ख़ुशबू से भर गया और सभी औरतें अपनी कुर्सियाँ छोड़ कर धीरे धीरे डाइनिंग रूम में आने लगी।

रूप कौर सबको बता रही थी कि कर्नल साहनी को मटन बनाना उनकी माँ ने नहीं, ख़ुद उसने सिखाया था। कर्नल साहनी सबको प्लेट देते हुए “मटन ज़रूर ट्राई करना, मैंने बहुत महनत से बनाया है” बोल रहे थे।

बाक़ी सब आदमी अब खाना परोस रहे थे और किस पकवान में क्या क्या डला है, साथ साथ बताते जा रहे थे।

जब सभी औरतों ने खाना ले लिया और अपनी अपनी जगह बैठ गई तो कर्नल साहनी और रूप कौर अपने दोस्तों को खाना परोसने लगे और आख़िर में साहनी परिवार भी खाना खाने, सबके साथ बैठ गया।

यह रिवाज कर्नल साहनी के घर में सालों से चला आ रहा है। साल में कम से कम दो बार, सभी जिगरी दोस्त मिल कर अपनी बीवियों का मन पसंद खाना बनाते हैं।

कर्नल इसे प्यार से ‘लेडिस डे’ कहते हैं। ये कर्नल साहनी और उनकी बीवी रूप की बनाई हुई कुछ ज़रूरी रस्मों में से एक थी।

आज के दिन वो सभी लोग, जो उनके दिल के बेहद क़रीब हैं, उनके घर आते हैं। सभी आदमी, चाहे वो पति हों, बेटे, भाई या दामाद, मिलकर अपने घर की ‘लेडीज़’ के लिए खाना बना कर हर तरह से उन्हें ख़ुश करते हैं।

लेकिन इस रिवाज़ की सबसे बड़ी वजह थी उनकी बेटियाँ। आज के दिन चाहे कोई कहीं भी हो घर आता था। घर की रौनक़ उनकी बेटियों से ही तो थी। प्रियो, सरस और नीली तीनों ही उनके जिगर का टुकड़ा थी। प्रियो, जो कुछ समय से अपने माँ बाप के साथ रह रही थी, बेधड़क अपनी ज़िंदगी जीती थी। सब कुछ अपनी शर्तों पर। सरस की ज़िंदगी की सारी ख़ुशियाँ विकी से थी, जो बचपन से ही उसके साथ था। अब उनकी शादी भी हो गई थी। और क्या चाहिए था? लेकिन नीली, उसको कर्नल साहनी समझ नहीं पा रहे थे। विक्रम के बाद वो जैसे टूट गई थी। उसने अपनी नौकरी छोड़ दी थी, गाना छोड़ दिया था, यहाँ तक कि अपने दोस्तों से मिलना जुलना भी बहुत कम कर दिया था।

उसको ख़ुश करने में कर्नल साहनी कोई कमी नहीं छोड़ते थे। किसी बात को ना नहीं कहते थे, लेकिन ये नीली उस छोटी सी नीली से बिलकुल अलग थी जो उसके पिता को याद थी। वो निडर लड़की, जिसने बचपन से आज तक ज़िंदगी से समझौता नहीं किया था जैसे एकदम से बिखर गई थी। और कर्नल साहनी से यह बात बिलकुल बर्दाश्त नहीं होती थी। वह कुछ भी कर के नीली को ठीक करना चाहते थे। चाहे फिर कोई कुछ भी सोचे। नीली की ख़ुशी से ज़्यादा उनको और कुछ नहीं चाहिए था।

“राज्जो देख ज़रा, नीली ख़ुश लग रही है ना?” कर्नल साहनी ने रूप के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

रूप भी उसी तरफ़ देख रही थी।

“वो लड़का कौन है, जो विकी के साथ खड़ा है?” रूप ने अभय की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

“पता नहीं, होगा कोई यार दोस्त” कर्नल साहनी ने बेमन से कहा। वह फिर से नीली को हँसता हुआ देखने लगे।

“डोंट टेल मी, तुमने देखा नहीं” रूप की आँखें अब अपने पति पर थी।

“क्या नहीं देखा? मैं तो शाम से कढ़ाई में पक रहे मीट को ही देख रहा हूँ”

“अरे! वो लड़का, उसे देखो ज़रा, नीली को कैसे टुकुर टुकुर देख रहा है”

“हैं!! अभी बताता हूँ, उसकी तू आँखें नोच लूँगा” कर्नल साहनी ग़ुस्से में कुलबुला उठे।

“अरे मेरे पागल फ़ौजी, नीली भी उसे देख रही है”

“क्या कह रही हो?” कर्नल साहनी ने अब ध्यान से पहले नीली को देखा और फिर अभय को। वाक़ई दोनों नज़रें चुरा चुरा कर एक दूसरे को देख रहे थे।

“ये अच्छी बात है ना राज्जो?” नीली के पिता की आवाज़ में चिंता थी।

“अच्छी नहीं, बहुत अच्छी बात है। वो विक्रम हमारी नीली को जिस गड्ढे में गिरा कर गया था, उससे वो आख़िर निकलेगी तो सही”

“श्श्श... उसके बारे में मुझे बात भी नहीं करनी” कर्नल साहनी ने रूप के कंधे पर सर रखते हुए कहा।

“तो फिर नहीं करेंगे” रूप भी अपने पति के सर पर सर रख कर अपने बच्चों को देखने लगी।

रात ऐसे ही गहरी होती गई। गाने चलते रहे, कुछ लोग सोफ़े पर बैठ गए, कुछ अभी

तक खाना ही खा रहे थे। थोड़े बहुत लोग नाच रहे थे और नीली और अभय बाहर बरामदे में बैठे बातें करते रहे। जाने क्या क्या बातें हुई। पुराने क़िस्से, बचपन की यादें, ज़िंदगी की सीख।

अभय ने नीली को बताया कि वो मर्चंट नेवी में काम करता है और साल के लगभग छह महीने घर से दूर, जहाज़ पर ही रहता है।

नीली ने उसे बताया कि वो भी घर से दूर रहती है, लेकिन काम करने के लिए नहीं बल्कि अपनी बहनो के साथ घूमने फिरने।

दोनों हँसने लगे। पता ही नहीं चला वो रात कैसे बीत गई और नीली विक्रम की याद को, जो हमेशा साएँ की तरह उसके पीछे चलती थी, भूल गई।

‘क्या इसी को सही इंसान का आना कहते हैं?’ नीली ने उस रात सोते हुए अपने आप से पूछा था।

कमबख़्त सिगरेट

“ओह नीली! लुक एट यू!” अभय ने ऐरपोर्ट से बाहर आते ही नीली को गले से लगा लिया।

नीली भी अभय को देख कर बहुत ख़ुश थी। उससे गले लग कर जैसे उसकी साँस में साँस आ गई, “तुम कैसे हो अभय?” नीली की बढ़ी बढ़ी भूरी आँखें अभय को देख रही थी।

“तुम्हारे बिना कैसा हो सकता हूँ?” अभय ने उन आँखों में देखते हुए कहा।

“अहम” साथ में खड़ी प्रियो ने अपना गला साफ़ किया तो मानों अभय को नीली के अलावा बाक़ी दुनिया दिखने लगी।

“ओह प्रियो! तुम्हें तो मैंने देखा ही नहीं, कैसी हो तुम?” उसने आगे बढ़ कर प्रियो को हल्के से गले लगाया।

“तुम्हारे यह कहने से पहले तक ठीक थी” प्रियो ने हँसते हुए जवाब दिया तो अभय शर्मा गया।

“ऐसा नहीं है” उसने नीली का हाथ पकड़ते हुए वो फिर पूछा “गाड़ी कौन चलाएगा?”

“ओह! तुम तो औटोमैटिक वाले बंदे हो ना?” प्रियो ने नीली को कोनी मारते हुए कहा।

“मैं मैनुअल भी चला लेता हूँ दीदी” अभय को पता था, प्रियो को तंग करने का इससे अच्छा शब्द नहीं हैं।

इससे पहले की प्रियो जवाब में कुछ कहती, नीली बीच में बोल पड़ी, “अरे! मैं चलाऊँगी ना, फ़िकर क्यूँ करते हो?”

“शुक्र है” अभय ने अपना नक़ली पसीना पोछते हुए कहा।

“अच्छा बच्चे। अभी से पसीने निकल गए। याद है ना, तुम्हारी बारात में गाड़ी मुझे ही चलानी है। वहाँ नीली नहीं आएगी तुम्हें बचाने। क्यूँ नीली?”

शादी का नाम सुन कर नीली कुछ ना बोली।

“नीली, तू कहाँ खो गई?” प्रियो ने अभय को देखते हुए कहा, “लगता है अभी से सपने लेने लगी।”

नीली ने हल्की सी मुस्कुराहट के साथ सर हिलाते हुए कहा, “नहीं नहीं ऐसा कुछ नहीं है, मैं पार्किंग से गाड़ी ले कर आती हूँ, तुम दोनों यही रुको।”

प्रियो नीली का यह चहरा पहचानती थी। कुछ तो गड़बड़ थी। नीली के चहरे से प्रियो के

चहरे तक वो घबराहट पहुँचते देर नहीं लगी। अभय ने भी प्रियो को देख कर एक घबराई सी मुस्कुराहट दी और फिर अपनी जेब से फोन निकाल कर उसमें देखने लगा।

नीली गाड़ी ले कर आ गई और अभय अपना सामान लेकर पीछे वाली सीट पर बैठ गया।

प्रियो ने नीली के साथ वाली सीट पर बैठते ही आँखो ही आँखो में पूछा, 'सब ठीक तो है ना?' नीली ने आँखें फेर ली।

थोड़ी देर में गाड़ी ऐरपोर्ट से बाहर निकल गई और हवा से बातें करने लगी। सर्दी की धूप में सड़क के दोनों तरफ़ लगे सरसों के खेत लहरा रहे थे। गाड़ी के अंदर बैठे तीनों लोगों में से किसी ने यह नहीं देखा। तीनों अपने ख़यालों में खो रखे थे। बीच बीच में अभय आगे लगे हुए शीशे में नीली को देखता तो नीली आँखें फेर लेती। 'क्या हम लोग वापिस उस जगह तो नहीं जा रहे?' अभय के दिमाग़ में एक छोटे से ख़्याल ने दस्तक दी। 'नहीं नहीं', उसने फट से अपने दिमाग़ को कस के बंद कर दिया। अगर ऐसा कुछ होता तो नीली शादी के लिए कभी हाँ नहीं कहती। उसने अपनी जेब से ईअर फोन निकाले और अपने कानों में डाल कर फोन पर गाने सुनने लगा। एक घंटे के पूरे सफ़र ऐसी शांति में ही निकल गया और कोई किसी से कुछ बोला।

जब शहर आ गया और सड़क के दोनों तरफ़ बड़ी बड़ी दुकाने ज़मीन हड़पने लगी तो प्रियो ने अभय से पूछा, "कुछ खाओगे?"

अभय, जो अभी तक खिड़की से बाहर देख रहा था धीमे से बोला, "नहीं प्रियो, अब बस घर जा कर सोऊँगा। पापा भी इंतज़ार कर रहे होंगे, मैं तुम लोगों से रात को मिलूँगा।"

"हाँ रात को तो तुम्हारे ससुर जी ने तुम्हें बुलाया है" प्रियो ने अपनी आवाज़ में थोड़ी ख़ुशी भरते हुए कहा।

इसका जवाब अभय ने बस एक मुस्कुराहट से दिया। उसने शीशे में फिर से नीली को देखा जो आगे सड़क पर चलती हुई गाड़ियों को देख रही थी।

देखते ही देखते अभय का घर आ गया। गाड़ी से उतर कर उसने हाथ हिला कर "बाय" बोला और अंदर चला गया।

उसके अंदर जाते ही नीली ने गहरी साँस ली।

"वो क्या था?" अब चूँकि अभय गाड़ी में नहीं था तो प्रियो ज़ोर से बोली।

"क्या?" नीली प्रियो की आवाज़ में भरे ग़ुस्से को नज़रअन्दाज़ करती हुई बोली।

"तुम्हारी उससे शादी होने वाली है नीली"

"शादी, शादी, सबको शादी की ही क्यूँ पड़ी है? मुझसे अभी ये सब बात मत कर प्रियो"

“क्या हुआ तुझे? तुझे ही तो करनी थी शादी। अब जब हो रही है तो ऐसे मुँह बना रखा है जैसे कोई ज़बर्दस्ती कर रहा हो।”

“वो बात नहीं है प्रियो।”

“तो फिर क्या बात है?”

“सिगरेट पिएँ?” नीली ने प्रियो की तरफ़ देखते हुए पूछा और प्रियो चुप हो गई। वो नीली को जानती थी। जब तक नीली ख़ुद ना चाहे, कोई उसके मन की बात नहीं जान सकता था।

“चल” उसने नीली को देखते हुए कहा। फिर क्या था, घर जाती हुई गाड़ी राजपुर की तरफ़ घूम गई।

शहर से थोड़ा बाहर, पहाड़ी रास्ता शुरू होते ही नीली ने गाड़ी रोकी और प्रियो फट से वहाँ पर लगी इकलौती दुकान से सिगरेट ले आई और नीली के साथ गाड़ी के बोनट पर बैठ गई।

नीली ने अपने पर्स से लाइटर निकाल कर दोनों की सिगरेटें जलाई और फिर सामने पहाड़ों के नीचे बसे शहर को देखने लगी।

प्रियो भी चुपचाप बैठी रही।

“यार मुझे अभय से कोई प्रोबलेम नहीं है” आख़िरकार नीली के मुँह से निकला।

“तो फिर किससे है?” प्रियो ने सामने देखते हुए कहा।

“शादी से”

प्रियो हँस पड़ी।

“मैं समझ चुकी हूँ प्रियो कि मैं शादी कर के फँस जाऊँगी और जब मुझे लगेगा कि मुझे यहाँ से निकलना है, तो बहुत देर हो चुकी होगी। माँ पापा जितनी अच्छी शादी किसी की नहीं हो सकती।”

“पर क्यूँ?”

“क्यूँकि अब लोग वैसे नहीं रहे प्रियो। तेरी शादी भी तो टूट गयी। तूने कोई कमी रखी थी क्या?” नीली ने प्रियो को देखा, जो सिगरेट के धुएँ के छल्ले बनाने की कोशिश कर रही थी।

“मेरी शादी अलग थी नीली। संदीप मुझे मारता था। अभय ऐसा नहीं है। वो तुझे ख़ुश रखेगा। विकी और सरस को देख। वो कितने ख़ुश हैं एक साथ।” बोलते बोलते प्रियो की

आवाज़ भारी हो गई।

नीली ने फट से उसे अपने सीने से लगा लिया, “मेरा इरादा तुझे दुःख पहुचाने का नहीं था प्रियो, बस मैं डर रही हूँ। विक्रम के बाद, तू जानती है, ये सब फिर से होना आसान नहीं है।”

“तो ये सब तूने पहले ही अभय से क्यूँ नहीं कहा? जब अभय ने तुझसे एक साल पहले ये सवाल किया था तू तब भी भाग गई थी। उसकी हिम्मत है कि उसने फिर से तुझसे पूछा। तुझे इस बार भी हाँ नहीं करनी चाहिए थी।”

“मुझे क्या पता था उसका पंडित इतनी जल्दी तारीक निकाल देगा! मैंने सोचा था कि तब तक मैं हिम्मत बना लूँगी। लेकिन दो महीने में ही शादी हो जाएगी, ये थोड़ी पता था।”

“तू मुझे बस ये बता कि तू अभय से प्यार करती है या नहीं बाक़ी सब की बात छोड़ दे।” प्रियो ने अपनी सिगरेट बुझाते हुए पूछा।

नीली कुछ ना बोली।

“देख नीली” प्रियो बोल ही रही थी कि नीली का फोन बजा और प्रियो की बात बीच में ही रह गई।

फोन की स्क्रीन पर ‘मम्मी’ लिखा हुआ था।

“हाँ मम्मी, क्या हुआ?” नीली ने फ़ोन उठाते ही पूछा, दूसरी तरफ़ की आवाज़ सुनते ही उसके चहरे का रंग उड़ गया, “क्या कह रहे हो?” “कैसे?”

नीली ने फोन रखा और प्रियो का हाथ खींचते हुए बोली, “चल प्रियो घर फटाफट!”

नीली और प्रियो जितनी जल्दी हो सके घर पहुँचे और दरवाज़ा खोलते ही सामने जो था, उसे देख कर समझ नहीं आया कि हँसा जाए या रोया।

सरस ज़मीन पर बैठी अपनी शादी की अल्बम में से तस्वीरें निकाल निकाल कर फाड़ रही थी। उसके पीछे उसकी माँ अपना सर पकड़ कर बैठी थी। अपनी दोनों बेटियों को अंदर आता देख, वो उछल कर खड़ी हो गई।

“सम्भालो अपनी पागल बहन को” रूप कौर बोली और अंदर चली गई। सरस के ग़ुस्से से कौन वाक़िफ़ नहीं था? लेकिन आज तो घर में जैसे तूफ़ान ही आ गया हो।

“सरस, क्या हो गया?” प्रियो ने सरस के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा।

सरस ने उसका हाथ झटक के हटा दिया, “मुझे नहीं रहना विकी के साथ”

“अरे ऐसे क्यूँ बोल रही है? ऐसा भी क्या हो गया तुम्हारे बीच?”

“बस नहीं रहना ना।”

“देख सरस, तू बच्चों वाली बातें मत कर” प्रियो ने सरस के हाथ पकड़ते हुए कहा।

जब सरस और तस्वीरें नहीं फाड़ सकी तो ज़ोर ज़ोर से रोने लगी, “विकी ने अभी भी शराब नहीं छोड़ी।”

“बात ये नहीं है ··· बात क्या है मैं बताता हूँ” विकी जो अभी तक अंदर बैठ कर कर्नल साहनी से बात कर रहा था बाहर आ गया।

“कल रात को मैडम पब में अकेली बैठी हैं। पूछा तो बोली मैं अपने किसी दोस्त से मिलने आई हूँ।”

“तो तुम क्या कर रहे थे वहाँ? तुमने तो शराब छोड़ दी थी ना” सरस ने चिल्लाते हुए कहा।

“मैं अपने दोस्तों के साथ था। और तुम्हें बता कर निकला था। मुझे नहीं पता था कि हम लोग पब आएँगे”

“लेकिन तुम शराब तो पी रहे थे ना?”

“हाँ, तो पब में निम्बू पानी थोड़ी ना पियूँगा”

“तुमने मुझसे वादा किया था कि नहीं पियोगे” सरस रोते हुए बोली।

“तुम बात घुमाओ मत सरस, मैं तुम्हारे नाटक अच्छे से जानता हूँ। मैं तुम्हारे पब आने से ग़ुस्सा नहीं हुआ” उसने प्रियो और नीली को देखते हुए आगे कहा, “उस पब में जो तमाशा हुआ, उससे हुआ। मेरे सब दोस्तों के सामने इसने मुझे थप्पड़ मार दिया।”

“नाटक? मैं नाटक कर रही हूँ? तुम मेरी जगह होते ना तब पता चलता।” सरस की आवाज़ में कभी ग़ुस्सा, कभी दुःख, कभी चिड़, बदल बदल कर आ रही थी।

प्रियो ने अपना सर पकड़ लिया। जब उसने नीली को देखा, तो वो समझ गई कि असली नाटक तो अब शुरू होगा।

उन दोनों को झगड़ता देख नीली घबरा गई थी। अभी ही तो प्रियो और वो बात कर रहे थे कि सारे रिश्ते ख़राब नहीं होते। लेकिन ये सब क्या हो रहा था? क्या सच में दुनिया में एक भी रिश्ता नहीं था जो नीली की कसौटी पर खरा उतर सके? वो घबरा कर अपने कमरे में आ गई और उसके पीछे पीछे प्रियो भी। रूप और कर्नल साहनी में से कोई एक अपने कमरे से बाहर आता और फिर दोनों मियाँ बीवी की आवाज़ें सुन वापिस अंदर चला जाता। बच्चों के फ़ैसले के बीच वो कभी नहीं बोले थे। फिर आज कैसे बोल सकते

थे?

यह सब चल ही रहा था कि दरवाज़े की घंटी बजी और सब एकदम चुप हो गए।

“अब कौन आया है?” नीली ने परेशान होते हुए कहा और फिर उसे बाहर से अपना नाम सुनाई दिया।

बाहर अभय खड़ा था! प्रियो समझ गई और उसके कंधे पर हाथ रखती हुई बोली, “कोई उलटी हरकत मत करना”

नीली ने सर हिला कर ‘हाँ’ कह दिया।

प्रियो ने दरवाज़ा खोला और अभय अंदर आ गया। विकी और सरस वही बैठे हुए थे। उन्हें देख कर अभय थोड़ा ठिठक गया, लेकिन प्रियो उसका हाथ पकड़ कर अंदर ले आई।

“रेस्ट कर लिया तुमने?” वो हँसती हुई बोली।

अभय ज़मीन पर बिखरी हुई फटी तस्वीरों को देखता रह गया। सरस और विकी दोनों की नज़रें ज़मीन पर थी।

“मैं कल आता हूँ।” अभय ने झिझकते हुए कहा।

“नीली यहीं है, मिल के चले जाओ ना” प्रियो ने प्यार से बोला तो अभय मान गया।

अभय को नीली के कमरे में छोड़ कर प्रियो चली गई।

“सब ठीक तो है ना?” नीली को देखते ही अभय बोला।

नीली ने कोई जवाब नहीं दिया।

“वो बाहर क्या हो रखा है? उन लोगों की लड़ाई हुई क्या? नीली, तुम सुन रही हो?”

नीली कुछ ना बोली।

“मेरे साथ इतना अजीब सा बर्ताव क्यूँ कर रही हो?”

नीली ने अभय की तरफ़ देखा तो उसकी आँखों में आँसू थे।

“नीली, तू रो क्यूँ रही है? क्या हो गया? अपने मन की बात एक बार तो बता” अभय ने हताश होते हुए कहा।

“इनकी भी शादी टूट रही है” नीली सुबकने लगी।

“किसकी शादी?”

“बाहर देखा नहीं तुमने?” नीली ने अभय की आखों में आँखें डालते हुए कहा।

“यह सब तो चलता रहता है नीली तुम इससे परेशान हो?”

“मुझे शादी नहीं करनी” नीली के मुँह से जैसे ही यह शब्द निकले, उसने अपने मुँह पर हाथ रख लिया।

“क्या?” अभय को लगा कि उसने ठीक से सुना नहीं, “नीली, तुमने क्या कहा?”

“कुछ नहीं, मैं बस यही कह रही थी कि हम थोड़ा इंतज़ार कर लेते हैं”

“इंतज़ार? किस लिए?” अभय की आवाज़ थोड़ी बदल गई।

“क्यूँकि, मुझे नहीं पता कि हमारी शादी चलेगी या नहीं। अपने चारों तरफ़ देखो, दुःख ही दुःख है।”

“तुम क्या बकवास कर रही हो नीली? क्या ये सब उस साले विक्रम की वजह से हो रहा है?”

“नहीं!” नीली को पता था कि बात उठेगी तो विक्रम का नाम आएगा ही। और ये सब बोलने के बाद तो बात उसके हाथ से जा ही चुकी थी।

अभय का चहरा ग़ुस्से से तमतमा रहा था। नीली ने उसे इतना ग़ुस्सा कभी नहीं देखा था।

“तुम ग़ुस्सा क्यूँ हो रहे हो?” नीली घबराते हुए बोली।

अभय ने टेबल पर रखी उन दोनों की तस्वीर हाथ में उठाई और फिर ज़ोर से नीचे पटक दी। काँच के टुकड़े ज़मीन पर बिखर गए।

नीली को समझ आ गया कि अब कुछ नहीं सम्भलेगा।

“क्या तुमने कभी मुझसे प्यार किया भी था नीली? या तुम अपने दुःख में ही डूबी रही?” अभय ने बहुत देर चुप रहने के बाद पूछा।

नीली कुछ ना बोली।
“तुम्हें सिर्फ़ अपने दुःख से प्यार है। जैसे दुनिया में सिर्फ़ तुम्हारे ही सर पर पहाड़ टूटा। तुम अकेली इंसान हो जिसे किसी ने अकेला छोड़ा। और किसी को तो पता ही नहीं कि प्यार क्या होता है। है ना?”

“अभय००० ऐसा नहीं है।“

“तो फिर कैसा है नीली। क्या मैंने तुम्हारी शक्ल नहीं देखी थी सुबह? क्या मैं यहाँ बेवक़ूफ़ बनने आया हूँ?”

पानी सर से ऊपर जा चुका था और अब नीली कुछ भी कहती या ना कहती उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ने वाला था।

“तुम पानी पियोगे?” उसने आख़री बार कोशिश करी।

“ये तुम्हारे लिए मज़ाक़ है ना नीली। तुम्हारी ज़िंदगी पर तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। तुम्हारे बाप ने जो तुम्हें बिगाड़ रखा है। और तुमसे क्या उम्मीद रखे कोई।”

“क्या बक रहे हो। पापा को बीच में मत लाओ”

“मैं कहाँ ला रहा हूँ नीली । वो तो हमेशा ही हमारे बीच में थे। तुम्हारी ये अकड़, तुम्हारा ये हर बात पर मुँह बनाना, अपने आप को सबसे ऊपर समझना, यहाँ तक कि अपने दुःख को भी सबसे बड़ा बताना, ये सब तुम नहीं, कर्नल साहनी हैं।”

“बस अभय। अब तुम बहुत बोल चुके। घर जाओ, हम कल बात करेंगे।”

“मुझे कोई बात नहीं करनी। तुम्हें ख़ुद ही नहीं पता तुम क्या चाहती हो तो क्या बात करोगी? ज़िंदगी मज़ाक़ नहीं नीली। तुम क्या मना करोगी, जाओ मैं तोड़ता हूँ ये रिश्ता। तुम आज़ाद हो नीली साहनी। जिस चीज़ से डर था ना, वो चीज़ मैंने हटा दी।”

मानों नीली के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। उसने सोचा था कि कैसे वो शादी की तरीक थोड़ी आगे करवा लेगी। कैसे धीरे धीरे अपना मन बना लेगी। कैसे अभय के पापा से अपना रिश्ता मज़बूत करेगी और फिर आराम से, आसानी से और तसल्ली हो जाने के बाद दुल्हन बन कर अभय के घर जाएगी। ये सब एक तरतीब से होना था। लेकिन आज ये सब क्या हो गया? ये तो नीली ने कभी नहीं चाहा था कि रिश्ता ही ख़त्म हो जाए। क्या दोस्ती और शादी के बीच थोड़ा रुक नहीं सकते थे?

लेकिन अभय सब कुछ सोच समझ कर ही तो बोलता है। उसने कभी नीली की तरह अपने रिश्ते पर सवाल नहीं किए थे। जो था जैसे था सब कुछ माना था।

इसलिए जब नीली ने शादी ना करने की बात करी तो अभय का दिल पूरी तरह टूट गया।
बिना कुछ बोले वो नीली के घर से चला गया और नीली को समझ नहीं आया कि ग़ुस्सा हो या उसे रोके। रोए या फिर ख़ुश हो कि अब उसे इतनी जल्दी शादी नहीं करनी पड़ेगी।

थोड़ी देर बाद, जब उसे अभय की गाड़ी निकलने की आवाज़ आई तो उसकी आखों से धीरे धीरे आँसू बहने लगे। उसकी आँखो के सामने कभी अभय की शक्ल आती तो कभी विक्रम की। उसे अपना नाम कभी अभय की आवाज़ में सुनाई देता तो कभी विक्रम की।

ये क्या हो रहा था? अभय इतना दूर क्यूँ चला गया एकदम से? क्या वो सचमुच ही रिश्ता तोड़ गया या कल वापिस आ जाएगा? कल क्यूँ? अभी घर पहुँचते पहुँचते ही याद ना आई तो देखना। अभी फ़ोन करेगा, और सब ठीक हो जाएगा। लेकिन आज जो सीने में दर्द हो रहा था, कहीं वो इसलिए तो नहीं था क्यूँकि सच में हमारा रिश्ता ख़त्म हो गया है? नहीं नहीं ऐसा कुछ नहीं होगा।

ऐसे कितने ही सवाल नीली के दिमाग़ में आते रहे लेकिन अभय का फ़ोन नहीं आया। वो रात भर अपना फ़ोन देखती रही, लेकिन कुछ नहीं। रह रह कर उसके दिमाग़ में अभय की बातें चल रही थी, “तुम्हें ख़ुद ही नहीं पता तुम क्या चाहती हो”

“मुझे पता है” उसने अपने आप को जवाब देते हुए कहा। लेकिन अभय सच कह रहा था। अपने पापा के नाम के अलावा नीली के पास था ही क्या? कल को अगर कोई उससे पूछता कि नीली तुम्हें ज़िंदगी में क्या करना है, तो उसका जवाब वो ठीक से नहीं दे पाती। क्या सच में उसके पापा का प्यार उसकी ज़िंदगी पर हावी था?

“क्या हुआ?” सरस जब कमरे में आई तो उसकी आँखे रो रो कर सूजी हुई थी।

नीली ने उसे अपने गले से लगा लिया। उसके गले लगते ही सरस फिर से रोने लगी।

पता नहीं आज कितनों के दिल टूटने थे। आज कितनों का मन भारी होना था। कितने लोगों को आज नींद नहीं आएगी। नीली के मन में अभय से शादी करने की जो ख़ुशी थी, वो भी चली गई थी।

“मेरी शादी टूट गयी नीली” सरस ने नीली को गले लगाए लगाए ही बोला।

“मेरी भी” नीली ने धीमे से जवाब दिया।

पहाड़ों की रानी – मसूरी

मसूरी पर बसें दो जगह आ कर रुकती हैं – लाईब्रेरी और पिक्चर पैलेस। अगर आप टूरिस्ट हैं और घूमने फिरने आए हैं, तो आप लाईब्रेरी पर उतरेंगे और उससे सटी हुई माल रोड पर सैलानियों के सैलाब में खो जाएँगे।

लेकिन अगर आप लोकल हैं, तो आप दिन में सिर्फ़ दो बार चलने वाली वो बस पकड़ेंगे जो पिक्चर पैलेस आती है। यह मसूरी का वो हिस्सा है जहाँ कोई चकाचौंध नहीं है। सड़क के दोनों तरफ़ छोटे छोटे ढाबे हैं जिनके आस पास टिहरी और पास के गाँव जाने वाली बोलेरो टैक्सी ठसाठस भरी रहती है। यहाँ एक छोटा सा बाज़ार है जिसे कुलड़ी कहते है। इस बाज़ार से एक सड़क नीचे को, देहरादून की तरफ़ चली जाती है और दूसरी चढ़ाई चढ़ती हुई लाल टिब्बे को।

फ़िलहाल इस सड़क पर नीली दो बड़े बैग ले कर चढ़ रही थी। एक एक क़दम का एहसास उसके पूरे शरीर को हो रहा था। उसकी साँसे बहुत तेज़ हो गई थी और सीने में हल्का हल्का दर्द भी शुरू हो गया था। ऐसे लग रहा था मानों बहुत तेज़ भाग कर आई हो। ठंडी हवा उसके चहरे को जैसे काट रही थी और उसके सर में हल्का हल्का भारीपन भी आने लगा था। अभी तो उसे यहाँ आए एक घंटा भी नहीं हुआ था।

दो किलॉमीटर चढ़ाई पूरी कर लेने के बाद एक चौराहा आया जिससे एक सड़क लाल टिब्बे को जा रही थी, दूसरी टिहरी को और तीसरी उस घर की तरफ़, जहाँ नीली अब रहने वाली थी।

घर का गेट खोल कर दाहिने तरफ़ जो हरा दरवाज़ा था, अब नीली का था। घर की चाबी उसे महीने का किराया देते ही पकड़ा दी गई थी।
घर का दरवाज़ा खोल, अंदर क़दम रखते ही नीली ने आँखें बंद कर एक लम्बी साँस ली। ये सब सच था। वो और अभय अलग हो चुके थे। उनकी शादी नहीं होने वाली थी। अब वो अकेली थी। एकदम अकेली।

इस घर में दो कमरे थे, एक बाहर की बैठक, जहाँ कुछ पुराने सोफ़े पड़े थे और अंदर सोने का कमरा। अपने बैग ज़मीन पर रख नीली अंदर वाले कमरे में पहुँची जहाँ एक छोटा सा बिस्तर लगा हुआ था। उस बिस्तर के ठीक सामने एक बड़ी सी खिड़की थी, जहाँ से उसे पहाड़ और उनके उपर बसा हुआ बेढंगा सा शहर दिखाई दे रहा था। अभय को यह सब बहुत पसंद था। वो कितनी ही बार अपने कैमरे में ऐसी इमारतें क़ैद करता था। फिर अकेले बैठ कर उनको अपनी डायरी में उतारता। “तुम्हें इन लकीरों में क्या दिखता है?” जब नीली उससे पूछती, तो वह हमेशा जवाब में एक ही शब्द कहता, “सुकून”।

नीली की आँखों में आँसू तैर रहे थे, जिन्हें पोंछे बिना वो कमरे के साथ बनी हुई रसोई में आ गई। उसकी मकान माल्किन एक सुलझी हुई, अकेली, बूढ़ी औरत थी। उन्होंने नीली

का घर बहुत तरतीब से लगा कर रख दिया था। गैस का सिलेंडर भरा हुआ था, छत के ऊपर टैंक में पानी पूरा था, दो चार बर्तन, खाने की दो प्लेट, दो चम्मच, दो कटोरियाँ भी थी।

नीली ने चाय का पतीला निकाल कर उसमें पानी भरा और गैस जलाकर उसके ऊपर रख दिया। तभी बाहर से आवाज़ आई, "नीली बेटा"। सुधा आंटी बाहर खड़ी नीली को बुला रही थी।

"सब ठीक है ना बेटा?" सुधा आंटी के सफ़ेद बाल धूप में चमचमा रहे थे। उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट थी।

"जी" नीली ने जवाब दिया।

"इससे पहले कि मैं भूल जाऊँ बताना, हीटर और गीज़र साथ मत चलाना बेटा। पूरे घर की बिजली ऊड़ जाएगी"

"जी नहीं चलाऊँगी" नीली ने जवाब दिया।

"और खाने पीने का सामान घर से लाई हो या मैं कुछ दूँ?"

"जी मैं नीचे बाज़ार से ही ले आई थी"

"अच्छा अच्छा, बहुत अच्छा किया" सुधा आंटी ने अपनी बोझिल आँखों से नीली को देखते हुए कहा, "तुम पहली बार अकेली रह रही हो ना?"

नीली ने आँखें नीची कर के "हाँ" कहा तो सुधा आंटी ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया। उसे थपथपाते हुए वो बोली, "कोई बात नहीं बेटा, धीरे धीरे अच्छा लगने लगेगा।"

बहुत साल पहले वो भी शायद किसी की तलाश में या किसी से दूर जाने के लिए यहाँ आई होगी। नीली सोचने लगी।

थोड़ी बहुत बातें कर के सुधा चली गई और नीली वापिस अंदर आ गई।

सुधा आंटी को देख कर ना जाने क्यूँ उसे अजीब सा दुःख हुआ। ऐसा क्या हुआ होगा कि उन्हें सारी ज़िंदगी यहाँ अकेले रहना पड़ा? उनके साथ उनके चार कुत्ते और नौकर और उसके बीवी बच्चे थे पर वो तो अकेली ही थी ना। लेकिन इसीलिए ही तो नीली भी यहाँ आई थी। अपने घर से दूर, अपने माँ बाप, बहनो से दूर ताकि वो समझ पाए जो अभी तक साफ़ नहीं था – 'आख़िर वो चाहती क्या है?'

"ये धुआँ कैसा आ रहा है?" अंदर के कमरे से आते हुए धुएँ को देख कर सुधा आंटी बोली।

"चाय!" नीली को याद आया और वो अंदर किचन की तरफ़ दौड़ पड़ी। देखा तो पतीला पूरी तरह जल गया था और गाढ़ा सा धुआँ उगल रहा था।

उसने फटाफट गैस बंद करी। पतीला उतारने के लिए हैंडल पकड़ा तो उसका हाथ गरम हैंडल से चिपक गया। वो ज़ोर से चिल्लायी। हाथ में दर्द की एक बिजली सी दौड़ गई। नल खोल कर उसने पानी में हाथ डाला। पानी बहुत धीरे धीरे आ रहा था। वो अपना हाथ दूसरे हाथ से पकड़ कर नीचे बैठ गई। उसकी आँखो से आँसू बहने लगे। उसके होठों ने एक आकार बनाया, 'अभय'। आज तो पहला ही दिन था।

रात होते होते नीली को यह सब एक बहुत बड़ी ग़लती लगने लगी थी। उसे घर की याद आ रही थी। अपने माँ बाप का चहरा आँखों के सामने घूम रहा था।

इस एक हफ़्ते में, जब से अभय उससे दूर गया था, नीली ने किसी से भी ठीक से बात नहीं करी थी। सब चिंता कर रहे थे कि नीली कहीं कुछ कर ना बैठे। उसके पापा ने उसे कहीं बाहर चलने की, थोड़े दिन आराम करने की बात भी कही थी और उसे यक़ीन हो गया था कि उसे वाक़ई नहीं पता कि उसे क्या चाहिए। अगर अभय ने उसे जाते जाते हुए ये नहीं कहा होता, कि तुम्हारे पापा हमारे बीच में हैं, तो वो ख़ुशी ख़ुशी अपने पापा की सुझाई हुई बात पर अमल कर लेती और कहीं दूर चली जाती। वहाँ कई दिन रहने और बहुत सारी शराब पीने के बाद जब वो थक जाती तो उसे यह सवाल फिर से परेशान करता, 'आख़िर तू चाहती क्या है?' जिसे दबाने के लिए वो अपने पापा का मुँह देखती और उसे ख़ुश करने के लिए वो फिर से कोई तरकीब निकाल लेते।

लेकिन जिस दिन अभय गया, वो अपने साथ नीली का वो हिस्सा भी ले गया जो सोचता था कि ज़िंदगी में कभी कुछ ग़लत नहीं हो सकता। हाँ, विक्रम की बात अलग थी, लेकिन नीली उस दुःख से भी तो बस निकलने ही वाली थी ना? और अब अभय के साथ ज़िंदगी बिताने के लिए भी तो वो तैयार हो ही रही थी। उसे बस थोड़ा टाइम ही तो चाहिए था। 'आख़िर तू क्या चाहती है नीली?' ये सवाल फिर से उसके दिमाग़ में घूमने लगा।

यही सब सोचते सोचते कब रात हो गई पता ही नहीं चला। नीली ने बैग से अपने कपड़े निकाल कर अलमारी में रख दिए थे। कल उसकी नौकरी का पहला दिन था और अगर सब ठीक होता, तो कल उसकी शादी भी होनी थी। लेकिन अब यह सब सोच कर कोई फ़ायदा नहीं, क्यूँकि अभय जा चुका था और नीली अभी भी अपने आप को समझ नहीं पा रही थी।

नीली अपने छोटे से बिस्तर पर आ कर लेट गई। उसने अपने फ़ोन में अभय की फ़ोटो देखी फिर उसका नम्बर, जो उसे दिल से याद था, डाइल करना शुरू किया। एक हफ़्ता हो गया था उसकी आवाज़ सुने। लेकिन अब वो किस मुँह से उसे फ़ोन करती। उसकी आँखों के सामने उसका चहरा आया। डरा हुआ, परेशान, जो नीली की बातों पर यक़ीन करने को तैयार ही नहीं था। नीली ने फट से फ़ोन ऑफ़ कर दिया और आँखें बंद कर लेट गई।

अगली बार जब नीली की आँख खुली तो बाहर दो लड़कियों के चिल्लाने की आवाज़ आ रही थी। वो घबराकर बिस्तर से बाहर कूदी और पर्दा खोल कर बाहर देखने लगी।

बाहर अभी भी अँधेरा था और कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। उसका कमरा एकदम ठंडा हो गया था और पैर जम रहे थे। साँसे धुआँ बन कर मुँह से निकल रही थी। उसने आँखें मली और बाहर ध्यान से देखा। ऐसा लगा जैसे हवा में रुई के छोटे छोटे टुकड़े उड़े जा रहे हो। उसे कुछ समझ नहीं आया, फिर उसने नीचे सड़क पर देखा, जहाँ से उन लड़कियों के चिल्लाने की आवाज़ आई थी। स्ट्रीट लाइट के नीचे वो दो लड़कियाँ अभी भी खड़ी थी और ख़ुशी से उछल रही थी। फिर उनमें से एक लड़की ने जैसे ही नीचे झुक कर हाथ में एक सफ़ेद गोला बना कर दूसरी पर फेंका, तो नीली को समझ आया – बर्फ़ गिर रही है।

उन लड़कियों को ख़ुश देख कर जैसे उसके सीने पर जो भार था एक पल के लिए उठ गया। उसकी साँसे थोड़ी देर के लिए हल्की हो गई। उन लड़कियों में उसे अपना बचपन दिखाई दिया। सरस, प्रियो और नीली, तीनों ऐसे ही तो खेला करते थे। फिर अचानक उसका फोन बजा और वो सपने से बाहर आ गई। स्क्रीन पर रिमाइंडर बज रहा था – शादी मुबारक।

ये हटाना वो कैसे भूल गयी?

वो भार जो बस हटा ही था, जैसे दोगुना हो कर उसके सीने पर फिर से गिर गया। उसकी आँखो के सामने बस अभय था। आज उन दोनों की शादी थी। वो लहंगा, वो फूल, वो ख़ुशबुएँ, वो रंग, सब कुछ उस घर में छूट गया था। अब वो सिर्फ़ चीज़ें थी जिसे किसी ने समेट दिया होगा।

वो छोटे बक्से जो उसकी माँ ने उसके लिए तैयार किए थे, वो बर्तन जो प्रियो के साथ उसने पलटन बाज़ार की सबसे पुरानी दुकान से ख़रीदे थे, वो सारी किताबें जो उसे अपने साथ ले कर आनी थी, वो निशानियाँ जो उसे अपने घर में छोड़ कर जानी थी, सब कुछ वहीं रह गया।
अब कोई शादी नहीं थी। कोई सजावट वाला आकर घर में फूल नहीं लगाने वाला था। कोई हलवाई अपने चेलों के साथ उनके घर में खाना पकाने वाला नहीं था, कोई पंडित मंत्र नहीं पढ़ने वाला था। क्यूँकि अब कोई शादी नहीं होने वाली थी।

नीली के मुँह से एक आवाज़ निकली लेकिन उसे सुनाई नहीं दी और वो नीचे गिर पड़ी। फ़र्श एकदम ठंडा था। पता नहीं उसके हाथ पैर इतने भारी क्यूँ होते जा रहे थे। उसके पूरे शरीर में एक सिहरन सी दौड़ रही थी लेकिन वो अपने हाथ, पैर, कुछ भी हिला नहीं पा रही थी। आँखो से गरम गरम आँसूँ निकल रहे थे, उसके सर में ऐसा दर्द हो रहा था मानों किसी ने ईंटे मारी हो।

“ये मैंने क्या कर दिया?” उसने अपने आप से पूछा। लेकिन कोई जवाब नहीं आया।

“ये मैंने क्या कर दिया” उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

दूर कही दो लड़कियाँ अब भी बर्फ़ में खेल रही थी, इस बात से बिलकुल बेख़बर कि वहीं पास में, एक लड़की की पूरी ज़िंदगी उथल पुथल हो चुकी है।

अभय

“यार ये सिगरेट पीना कब बंद करेगा?” विकी ने अभय के घर में क़दम रखा तो बस धुआँ ही धुआँ था।

“कर दूँगा” अभय ने एक और सिगरेट जलाते हुए कहा।

“नीली से बात हुई?” विकी ने टेबल पर रखे हुए सिगरेट के पैकेट में से एक सिगरेट निकाल ली।

“नहीं”

“तो तू बात क्यूँ नहीं करता?”

“मैं अब क्या बात करूँ? वो सब कुछ बोल तो गई। मैं उससे ज़बरदस्ती शादी तो नहीं कर सकता ना?”

“पर पूछ तो सकता हैं ना कि उसके मन में क्या है? मैं नीली को बहुत सालों से जानता हूँ। उसे अपना मन पढ़ना नहीं आता।”

“ये मेरी ग़लती नहीं है” अभय की आवाज़ में अब भी ग़ुस्सा भरा हुआ था।

“पर क्या तू उसके साथ नहीं रहना चाहता?”

“ये चाहने ना चाहने की बात मुझसे अब मत कर विकी। मैंने ये सब सोचना छोड़ दिया है। शायद मेरी क़िस्मत में ही साथ नहीं किसी का”

विकी चुप हो गया। दोनो थोड़ी देर तक चुपचाप बैठे हुए सिगरेट पीते रहे। फिर थोड़ी देर बाद विकी बोला, “क्या मैं नीली से बात कर के देखू?”

“अब ये बात किसी के करने की नहीं है विकी। मैं नहीं चाहता कोई नीली को कुछ भी बोले”

“लेकिन तुझे पता है ना?”

“क्या?”

“नीली घर छोड़ कर चली गई है”

अभय के हाथ में उसका फ़ोन था, जिसमें वो नीली की फ़ोटो देखता रहता था। नीली के जाने की ख़बर सुन कर उसके हाथ में सबसे पहले उसका फ़ोन ही आया जिसे उसने दीवार पर दे मारा।

फिर वो चिल्लाया और विकी को देखते हुए बोला, “क्या उसे याद नहीं आई मेरी?”

“अभय सम्भाल अपने आप को”

“क्या सम्भालूँ? इतना आसान था उसके लिए मुझे छोड़ कर चले जाना? ये घर, ये घर में उसके लिए सज़ा नहीं रहा था क्या?”

“मैं जानता हूँ अभय”

“नहीं, तू कुछ नहीं जानता, कोई कुछ नहीं जानता। ये लकड़ी की अलमारी मैंने नीली के लिए बनवाई थी, क्यूँकि एक बार एक होटल में नीली ने हमारा कमरा सिर्फ़ इसलिए बदलवाया था क्यूँकि उसे लकड़ी की अलमारी में कपड़े रखने थे। उसे लोहा पसंद नहीं है।”

विकी अभय को ऐसे देख रहा था जैसे कोई किसी पागल को देखता है।

“और उसे कितनी ठंड लगती है विकी, तुझे नहीं पता, मैंने हर रूम में हीटर लगवाया है। उसके लिए स्टडी टेबल, किचन में खाना बनाने के लिए सामान, मैं एक एक मसाला चुन चुन के लाया, क्यूँकि मेरी नीली को खाना बनाना अच्छा लगता है। और उसने क्या किया? क्या किया विकी? वो फिर से भाग गई।”

“अभय, मेरे दोस्त, मेरी बात सुन, सब ठीक हो जाएगा। मुझे यह सब नहीं बताना चाहिए था। देख मैं हूँ तेरे साथ।”

“मेरे साथ कोई नहीं” अभय ने विकी को देखते हुए कहा।

इस घर का कोना कोना नीली के आने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन नीली नहीं आई। नीली को तो यह भी समझ नहीं आया कि उस दिन उसे क्या कहना चाहिए था और क्या नहीं। अभय जितना शांत था नीली उतनी चंचल। अभय जितना आज में जीता था, नीली उतना ही सपनो में। अभय जितना अपने वादे का पक्का था, नीली उतनी ही कच्ची।

दुनिया में आया है तो काम कर प्यारे

सूरज की तेज़ रोशनी खिड़की से कमरे के अंदर आ रही थी। जब वो नीली की आँखों में पड़ी, तो नीली ने हल्के से आँखें खोल कर चारों तरफ़ देखा। एक छोटा सा कमरा, सामने खिड़की, उसे कुछ समझ नहीं आया। उसे लगा जैसे कल जो कुछ हुआ वो एक बुरा सपना था और असल में कुछ भी बुरा नहीं हुआ है। उसको बस अच्छे से आँखें मलनी हैं और मुँह धोना है और फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।

खिड़की के बाहर जब उसे बर्फ़ ही बर्फ़ दिखाई दी, तब जा कर उसे यक़ीन हुआ कि यह कोई सपना नहीं था। उसका सर अभी भी भारी हो रहा था। घड़ी में सात बज रहे थे और आज उसके काम का पहला दिन था! मसूरी के एक अख़बार में उसे नौकरी मिली थी। 7:30 बजे उसे काम पर रिपोर्ट करना था। उसने हिम्मत कर के अपने शरीर को बिस्तर से उठाया।

किचन का दरवाज़ा खोला तो खिड़की पर पूरी धुँध जमी थी। बाहर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। फ़िल्टर से थोड़ा सा पानी निकाल कर उसने एक घूँट भरा तो ऐसा लगा जैसे पानी गला चीरता हुआ नीचे गया हो। ज़मीन पर रखे हुए पतीले में उसने और पानी भरा और चाय बनाने के लिए रख दी।

‘बस 15 मिनट ही हैं, फटाफट तैयार हो कर निकलती हूँ’ अपने आप से कहते हुए उसने बाथरूम का दरवाज़ा खोला और दाँत साफ़ करने के लिए सिंक में लगा नल खोल दिया। नल में से पानी की दो तीन बूँदें गिरी और फिर ‘खो खो’ की आवाज कर नल बंद हो गया। नीली ने नहाने वाला नल खोला उसका भी यही हाल।

चाय उबल चुकी थी। उसने गैस बंद करी और बाहर भागी। दरवाज़ा खोलते ही वो एकदम चौंक गई। बाहर बर्फ़ ही बर्फ़ थी – ज़मीन पर, उसके घर के छोटे से गेट पर, पेड़ों पर, यहाँ तक की सुधा आंटी के कुत्तों के बालों में भी। नीली के घर के दरवाज़े और सामने सुधा आंटी के घर के दरवाज़े में बस 10 – 15 क़दम की दूरी ही थी, जिसमें लगभग एक फूट की बर्फ़ जमी हुई थी। नीली के पास अब और कोई चारा तो था नहीं, वो फटाफट भाग कर इस तरफ़ से उस तरफ़ आ गई। बर्फ़ अब भी गिर रही थी। उसने सुधा आंटी का दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाया।

शाल से लिपटी हुई सुधा आंटी ने दरवाज़ा खोला, “अरे बेटा, क्या हुआ सब ठीक है ना?”

“आंटी मेरे घर में पानी नहीं आ रहा”

“तुमने बालटी भर के नहीं रखी?”

“नहीं तो”

“ओह ! लगता है मैं बताना भूल गयी। बर्फ़ पड़ रही है ना रात से, वो लोहे का पाइप

जम जाता है, तो पानी नहीं आता।”

नीली की चप्पल और मोज़े दोनों गीले हो गए थे। वो बिना कुछ कहे वापिस अपने घर के अंदर आ गई। उसने ठंडी चाय एक कप में डाली और पी ली।

जब वो घूमने फिरने पहाड़ों पर जाती थी तो उसने कई बार बर्फ़ गिरते हुए देखी थी। हीटर से गरम कमरे में, उस बिस्तर पर लेट कर, जो बिजली से गरम होता है, उसने कभी सोचा ही नहीं कि लोहे के पाइप में पानी जम जाता है।

°°°

बर्फ़ में चलते चलते जब तक नीली ऑफ़िस पहुँची 9:00 बज चुके थे। उसने बर्फ़ में चलने का समय अपने दिमाग़ में गिना ही नहीं था। कहने को उसका ऑफ़िस घर से एक किलोमीटर दूर था, लेकिन इतनी बर्फ़ में, ढलान पर चलना कोई आसान बात नहीं थी। जब उसने ऑफ़िस के अंदर क़दम रखा तो उसके जूतों के अंदर बर्फ़ भर चुकी थी और अब पानी बन कर उसके मोजो से होती हुई उसके पैरों को गीला कर रही थी।

“मसूरी इक्स्प्रेस” का दफ़्तर किसी पुराने कारख़ाने से कम नहीं था। दरवाज़े के बाहर जो भी उजाला था, अंदर आते ही दब गया था। नीली ने अपने चहरे और पलकों से बर्फ़ झाड़ते हुए चारों ओर ध्यान से देखा। ऊँची सी छत से पीले पीले बल्ब लटक रहे थे। एक तरफ़ बड़ी बड़ी खिड़कियाँ थी, जिन्हें शायद कभी खोला नहीं गया था। दूसरी तरफ़ दीवार पर कुछ अंग्रेज़ों और कुछ हिन्दुस्तानियों की बहुत पुरानी तस्वीरें लटकी हुई थी।

कमरे में एक बुख़ारी थी, जिसके आस पास कुर्सी- मेज़ लगे हुए थे और सिर्फ़ एक मेज़, अकेला, खिड़की के पास था। इन सभी मेजों पर लोग बैठे हुए थे और वो कोने वाला मेज़, कमरे की बाक़ी सारी जगह लिए, ख़ाली था।

कमरे में पुराने से बस दो - तीन कम्प्यूटर रखे थे। यहाँ काम अब भी काग़ज़ और हाथ से ही होता था। नीली को ऐसा लगा जैसे इस पुरानी इमारत के अंदर घुसते ही वो कई साल पीछे चली गई हो। ये बात बुरी थी या अच्छी, इसकी फ़िक्र उसने नहीं की।

दफ़्तर के अंदर कई लोग थे जो काम में खो रखे थे। बुख़ारी के पास कई सारे कपड़े भी सूख रहे थे। दरवाज़े के पास एक बढ़ी सी बालटी में छाते और रेनकोट भी रखे हुए थे। नीली हर चीज़ को ऐसे देख रही थी जैसे ज़िंदगी में पहली बार देख रही हो। सब कुछ इतना पुराना होने के बाद भी कितनी तरतीब से चल रहा था।

“आप आ गई नीलिमाँ जी” एक बूढ़े से आदमी की आवाज़ ने नीली को चौंका दिया।

“दीवान चंद?” नीली ने उस आदमी की तरफ़ देखते हुए बोला, फिर उसके सफ़ेद बालों को देखते हुए उसने “जी” भी जोड़ दिया।

“जी हाँ बिलकुल। आप मुझे दीवान चंद कहिए। जी वी लगाने की ज़रूरत नहीं। बस चंदू

वंदु मत बोलिएगा।”

नीली शर्मा गई।

“बर्फ़ भी आपके आने का इंतज़ार कर रही थी। आज तक मसूरी में मैंने इतनी बर्फ़ पड़ते नहीं देखी। आइए” कहते हुए दीवान चंद आगे आगे चलने लगे और उनके पीछे पीछे नीली।

“आपको आने में दिक्कत तो नहीं हुई ना नीलम जी?”

“जी मेरा नाम नीली साहनी है”

“बिलकुल बिलकुल” दीवान चंद हँसते हुए बोले।

“हमारा अख़बार मसूरी इक्स्प्रेस मेरे दादाजी ने शुरू करा था” दीवार पर लगी हुई एक बड़ी सी तस्वीर के सामने खड़े हो कर वो बोले।

उस तस्वीर में जो आदमी था, किसी फ़िल्म ऐक्टर जैसा लग रहा था। शक्ल हिंदुस्तानी लेकिन हाव भाव एकदम अंग्रेज़ी। कोट पैंट पहने, एक हाथ में सिगार लेकर वो सामने देख रहा था। उसके पीछे बहुत सी किताबें रखी हुई थी। ‘अर्जुन सिंह’, उस तस्वीर के नीचे ब्रास की प्लेट में लिखा था।

दीवान चंद अपने दादा के बारे में बताने लगे - कैसे उन्होंने अपनी ज़िंदगी की सारी पूँजी इस अख़बार में लगा दी। कैसे उनके इस फ़ैसले से उनके परिवार में कोई ख़ुश नहीं था, कैसे बिना सहारे के ही सिर्फ़ अपनी हिम्मत से उन्होंने इस अख़बार को चलाना शुरू किया। आज यह अख़बार कितने ही लोगों से जुड़ गया था और कितने ही लोग इससे अपनी पहचान बना चुके थे।

नीली के पैर अब अंदर से पूरी तरह गीले हो चुके थे और उसे इस वक़्त दीवान चंद की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

दीवान चंद को शायद यह समझ आ गया और वो आगे चल दिए, “इस ऑफ़िस के पीछे ही हमारी प्रेस है, जहाँ रात भर काम चलता है” उन्होंने आख़िरकार कहा।

नीली ने सर हिला कर जवाब दिया।

“यह प्रेस हमारा दिल है। इसी की वजह से हम सब ज़िंदा है” उनकी आँखों में एक चमक थी, ठीके वैसी जैसी अपने बच्चे की तारीफ़ करते हुए किसी माँ की आँखों में होती है।

“चलिए अब आपका टेबल भी देख ले”

यह सुन कर नीली अपना बैग उठा कर उस कोने वाली मेज़ की तरफ़ चल दी जो अभी तक खली पड़ी थी।

“अरे वहाँ नहीं, आपकी जगह यहाँ बनाई है” नीली को रोकते हुए दीवान चंद बोले।

नीली ने ध्यान नहीं दिया था कि बुख़ारी के पास एक और मेज और कुर्सी आ गई थी। वो चुप चाप उस मेज़ पर आ कर बैठ गई।

“आप चाहे तो अपने जूते सुखा सकती है” दीवान चंद हँसते हुए बोले। उन्होंने नीली की बेचैनी को समझ लिया था।

अब नीली को वाक़ई शर्म आ रही थी।

“आप के लिए अच्छी सी चाय बनवाते हैं,” कहते हुए दीवान चंद एक बूढ़े से आदमी को चाय बनाने के लिए कह कर अपने केबिन में चले गए। नीली ने एक लम्बी, गहरी साँस ली। फिर उसने धीरे धीरे अपने जूते उतारे, गीले मोज़े निकाल कर पास वाली बालटी में निचोड़े और बुख़ारी के पास रख दिए। फिर अपना लैप्टॉप निकाल कर उसने मसूरी इक्स्प्रेस के बारे में इंटरनेट पर पढ़ना शुरू किया।

थोड़ी देर में चाय भी आ गई। दीवान चंद किसी से बात कर रहे थे और उनकी आवाज़ नीली को सुनाई दे रही थी। फिर वो अपने केबिन से बाहर निकले और नीली के पास आकर बोले, “नीलिमा, मैंने तुम्हें अपने बेटे से तो मिलाया ही नहीं”

उन्होंने उस कोने वाले टेबल की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

नीली ने ध्यान नहीं दिया था कि अब उस पर एक लड़का आ कर बैठ चुका था। उसके सामने बहुत सारे काग़ज़ थे जिन्हें वो फटाफट पढ़ रहा था। उसके हाथ में एक पेन्सल थी जो उन काग़ज़ों पर बहुत तेज़ चल रही थी।

“वो दिनकर है”

अपना नाम सुनते ही दिनकर ने सर उठा कर अपने पिता और फिर नीली को देखा और फिर उन पन्नों में खो गया।

नीली उसे देख कर मुस्कुराई पर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

“यह ऐसा ही है, काम में मगन” दीवान चंद हँसते हुए बोले।

“जी” नीली ने दिनकर को देखते हुए कहा और फिर अपने काम में लग गई। दीवान चंद भी बाक़ी लोगों से बात करते हुए, अपने केबिन में चले गए।

अदला बदली

नीली अपने कम्प्यूटर की स्क्रीन को देखते देखते कहीं खो गयी थी कि सामने से आते हुए क्लर्क, जिसकी शर्ट पर 'रमेश' नाम का फ़ीता लगा हुआ था, ने उसकी सोच बीच में रोक दी।

"साहब ने कहा है इनको पढ़ लीजिए, फिर बात करेंगे" रमेश अख़बारों का एक बड़ा सा गट्ठर नीली के टेबल पर रखते हुए बोला।

नीली ने सर हिला कर जवाब दिया और रमेश मुस्कुराते हुए वापिस दीवान चंद के केबिन में चला गया।

'इतने सारे अख़बार आज ही पढ़ने हैं?' अपने आप से पूछते हुए नीली ने पूरा गट्ठर उठा लिया। उसकी आँखें अख़बारों को रखने के लिए आस पास, कोई साफ़ जगह ढूँढ रही थी कि उसकी नज़र दिनकर पर पड़ी। अपने टेबल के ऊपर बैठ कर दिनकर सिगरेट पी रहा था और ठीक नीली की तरफ़ ही देख रहा था। उसकी आँखें नीली की आँखो से मिली तो उसने अपनी आँखैं हटाई नहीं। नीली को अजीब सा लगा। उसने अपनी आँखें नीची कर ली और फिर अख़बार रखने की जगह देखने लगी। वो इतनी घबरा गई कि उसने उस तरफ़ फिर देखा ही नहीं।

जैसे जैसे दिन निकलता गया, ऑफ़िस के बाक़ी सभी लोग, जो लगभग 20 -25 होंगे, आकर नीली से मिलते रहे। नीली ने धीरे धीरे ध्यान देना शुरू किया कि इस ऑफ़िस में लगभग सभी बूढ़े थे और इस अख़बार को अपनी पूरी ज़िंदगी दे चुके थे।

'दुनिया में ऐसे लोग भी होते है' नीली हर किसी से मिलते हुए सोचती। एक अख़बार से इतना प्यार कि फिर किसी और चीज़ के बारे में सोचा ही नहीं।

पर यह बात पूरी सच भी नहीं थी। कभी कभी इंसान एक चीज़ से इसलिए भी बंध जाता है क्यूँकि उसके पास बदलने के लिए दूसरा विकल्प होता ही नहीं। मसूरी भी ऐसी ही एक जगह थी। वही लोग जो आपको काम के समय ऑफ़िस में मिलते थे, शाम को दुकानों में दिख जाते थे। कॉफ़ी पीने जाओ तो पता चलता था कैफ़े उसी दुकान वाले का है जिससे आप आटा दाल लेते हो। सुबह दफ़्तर जाते हुए ठीक वही 5 लोग, एकदम उसी जगह पर खड़े मिलते थे। कभी कभी लगता था कि यहाँ समय चलता भी है कि नहीं?

ऐसे ही दिन बीतते गए और ठंड बढ़ती गई। हर शाम, ठीक 4 बजे, बर्फ़ गिरनी शुरू हो जाती और रात भर गिरती रहती। नीली अपने घर जाती तो गीज़र और हीटर बारी बारी से चला चला कर अपना काम चलाती।

हफ़्ते में एक बार वो घर फ़ोन करती। उसके पापा ने उससे जाते हुए बस एक ही वादा लिया था कि अगर उसे लगे कि ऐसे अब और नहीं रहा जा रहा तो सीधा घर फ़ोन करे। वो फटाफट उसे लेने आ जाएँगे।

उसकी आवाज़ सुन कर उसकी माँ रोने लगती और वापिस आने को कहती। कर्नल साहनी नीली से कोई बात नहीं करते थे। नीली ने कुछ कहा तो नहीं था लेकिन उसके बर्ताव से उन्हें यह पता था कि कहीं ना कहीं नीली के इस फ़ैसले में उनका हाथ था। वो सिर्फ़ नीली के बोलने का इंतज़ार कर रहे थे।

नीली के अचानक चले जाने से उसके घर में भी बहुत बदलाव आ चुके थे। प्रियो ने अलग घर ले लिया था और एक छोटी सी डिज़ाइन कम्पनी में काम शुरू किया था।

सरस और विकी अलग नहीं हुए थे, बल्कि थेरपिस्ट के पास जाने लगे थे।

नीली का जाना शायद सबके लिए एक धक्का था। उसके इस फ़ैसले ने सबको अपनी ज़िंदगी के फ़ैसले देखने के लिए मजबूर कर दिया था।

यह सब सुनकर नीली को कुछ देर का सुकून मिलता, लेकिन जैसे ही शाम आती, उसका मन बेचैन होने लगता। हर रोज़ उसे अभय की याद आती और वो रो कर अपना जी हल्का कर लेती। और करने को था भी क्या? उसने ख़ुद ही तो कहा था कि उसे शादी नहीं करनी। फिर किस मुँह से उसे बोलती कि जो कहा था ग़लत कहा था। कैसे पूछती कि 'क्या सब कुछ नए सिरे से शुरू नहीं कर सकते?'

लेकिन यह सब बातें वो सोने से पहले अपने आप से करती थी। फिर धीरे धीरे ये बातें भी कम होने लगी। वो ऑफ़िस से पैदल आते आते इतना थक जाती कि घर आकर सीधा सो जाती।

नीली को इस छोटे से शहर में रहते हुए एक महीना पूरा हो गया। अभय का कोई फ़ोन या मेसेज नहीं आया।

वो इतवार के दिन घर में बैठ कर अपने फ़ोन को देखती। अब फ़ोन आएगा, अब फ़ोन आएगा, अपने आप से कहती रहती। लेकिन जब फ़ोन नहीं आता तो ग़ुस्सा हो जाती। पर अब कोई मनाने वाला भी तो नहीं था। अपने आप को फिर ख़ुद ही मनाती और कहती, 'सब ठीक हो जाएगा'
"आपका फ़ोन बज रहा है"

"जी?" नीली अपनी कम्प्यूटर की स्क्रीन को देखते देखते कही खो रखी थी।

सामने दिनकर खड़ा हुआ था। उसके हाथ में काग़ज़ों का एक बड़ा सा गट्ठर था और मुँह में पेनसिल। उसका चश्मा उसके सर के ऊपर टिका हुआ था और उसकी भूरी चेक वाली शर्ट पर स्याही लगी हुई थी।

दिनकर ने पहली बार नीली से बात करी थी। नीली ने पहली बार दिनकर को इतने क़रीब से देखा था। उसकी आँखें बहुत बड़ी थी और नाक एकदम पतली। उसके चहरे पर एक अजीब सी उदासी थी जिसको नीली समझ नहीं पाई। जब नीली ने कुछ नहीं कहा तो दिनकर ने अपनी आँखो से नीली के फोन की तरफ़ इशारा किया।

अपना फ़ोन बजता देख नीली चौंक गयी। स्क्रीन पर ‘मम्मी’ लिखा आ रहा था। नीली ने फोन उलटा कर के रख दिया।

दिनकर ज़ोर से हँसा और अपने मेज़ की तरफ़ चल दिया।

नीली को यह बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा। वो उठ कर दिनकर के टेबल पर गयी और बोली, “आप जो सोच रहे हैं वैसा कुछ नहीं है”

“मैं तो कुछ नहीं सोच रहा”

“फिर आप हँसे क्यूँ?”

“क्यूँकि शायद आप मेरे सामने अपनी मम्मी से बात नहीं करना चाहती थी”

“ऐसा नहीं है”

“फिर कैसा है?”

“नन ऑफ़ योर बिज़्नेस” नीली ने कहा और वापिस अपने टेबल पर चली गयी।

जितनी तेज़ उसके मुँह से ये निकला उतनी जल्दी ही उसे यह बोलने का अफ़सोस भी होने लगा। वो कही का ग़ुस्सा कही और निकाल रही थी। और फिर इस दिनकर को तो वो जानती तक नहीं थी।

‘कही उसने दीवान चंद जी से बोल कर मुझे नौकरी से ही निकलवा दिया तो? नहीं नहीं ऐसा तो मैंने कुछ नहीं बोला, उसे इतना स्मार्ट बनने के लिए किसने कहा था?’ ऐसे ना जाने कितने ख़याल नीली के मन में आ रहे और जा रहे थे।

फिर कुछ देर बात चिंता ने दुःख को जगह दे दी और नीली को अपने कहे का अफ़सोस होने लगा। एक यही आदत थी जिसने उसके सामने इतनी सारी मुश्किलें खड़ी कर दी थी। अभय से उसने जो कहा वो ठीक नहीं कर सकती, लेकिन यहाँ कोशिश करने में क्या हर्ज़ है?

जब शाम हो गई और लगभग सभी लोग चले गए, तो नीली हिम्मत कर के दिनकर के मेज़ के पास जा कर बोली, “दिनकर?”

दिनकर अभी भी ड्राफ़्ट एडिट कर रहा था, उसने नीली को नहीं देखा। नीली ने अपना गला साफ़ करते हुए एक बार फिर से कहा, ‘दिनकर, आप सुन रहे हैं?’

दिनकर की नज़रें एक पल के लिए ऊपर उठी और फिर वापिस काग़ज़ों पर चली गई।

“मैं कह रही थी, कि क्या तुम, मेरा मतलब है°°°°”

“चाय” दिनकर ने अपनी पेन्सल नीचे रखते हुए कहा।

“क्या?” नीली को समझ नहीं आया।

“अगर मैं कॉफ़ी पीता तो कॉफ़ी बोलता, लेकिन मैं चाय पसंद इंसान हूँ।”

“मतलब?”

“मतलब तुम मुझसे माफ़ी माँगने आई हो और मैं तुम्हें सिर्फ़ तभी माफ़ करूँगा जब तुम मेरे साथ चाय पीने कहीं बाहर चलो”

“क्या कह रहे हो?” नीली के मुँह से निकला

“मेरा मन ऊब जाता है इन बुड्ढो के साथ बैठे बैठे। मैं डेट पर चलने के लिए नहीं कह रहा हूँ”

“मेरा वो मतलब नहीं था”

“अगर चलना है तो चलो, नहीं तो मेरा वक़्त ख़राब मत करो, मुझे और भी बहुत काम है” दिनकर वापिस अपने काग़ज़ों को समेटने लगा।

नीली वही खड़ी रही, कुछ भी नहीं बोली।

नीली को परेशान देख दिनकर अपनी कुर्सी से उठा और उसके पास जा कर खड़ा हो गया।

“चिंता मत करो नीली, मैं तुमसे कोई सवाल नहीं करूँगा और ना अपनी कोई बात सुनाऊँगा।”

“ठीक है” नीली कुछ सोचती, इससे पहले उसके मुँह से निकल चुका था।

“तो फिर कल ऑफ़िस के बाद चलते हैं। मुझे एक बहुत अच्छी जगह पता है।”

नीली जवाब दिए बिना चल दी। उसके मन में सिर्फ़ अभय था। ये उसने क्या कर दिया? दिनकर के मन में कोई ऐसी वैसे बात तो नहीं होगी ना? नहीं नहीं बस चाय पर ही तो बुलाया है। और फिर किसी के साथ चाय पीने जाना कोई बुरी बात थोड़ी ना है। है ना? वो सारी रात सोचती रही।

उसे पहली बार अभय से दूर जाने का डर लगा था। अभय का प्यार इतना पक्का था कि उसने कभी सोचा ही नहीं था कि वो उससे दूर जाएगी। लड़ाई झगड़े, मन मुटाव अपनी जगह थे, लेकिन इन दो सालों में नीली ने अभय को कभी हार मानते नहीं देखा था।

हार तो उसने भी नहीं मानी थी। लेकिन आज अपना ही मन इतना कटा कटा सा क्यूँ

लग रहा था? क्या वो वाक़ई अभय से दूर जा रही थी? क्या इसमें दिनकर का कोई हाथ था? क्या इस अदला बदली के लिए नीली तैयार थी?

नया फूल

चार दुकान, मसूरी की उन कुछ जगहों में से एक हैं जहाँ सर्दियों में जाना कोई पसंद नहीं करता। उत्तरी पश्चिम में होने की वजह से वहाँ सूरज की रोशनी भी बहुत देर से आती है। तब तक सर्द हवाएँ उस छोटे से चौराहे पर, जहाँ कभी बस चार ही दुकानें हुआ करती थी, अपना डेरा जमा चुकी होती है। क्यूँकि चार दुकान जाने के लिए काफ़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है, मसूरी इक्स्प्रेस के बूढ़े लोग वहाँ जाना पसंद नहीं करते और शायद इसीलिए दिनकर और नीली वहाँ एक छोटी सी दुकान में बैठ कर चाय पी रहे थे।

नीली का फ़ोन फिर से बजा – स्क्रीन पर 'सरस' लिखा आ रहा था। उसने फिर से फ़ोन साइलेंट कर दिया और उलटा कर के रख दिया।

"जिसके फोन का इंतज़ार आप कर रही हैं, उसके अलावा सब आपको कॉल कर रहे हैं। है ना?"
दिनकर ने अपना चश्मा ठीक करते हुए पूछा। उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कुराहट थी, जिससे नीली को लग रहा था कि वो उसके लिए किसी अनोखी चीज़ से कम नहीं।

"जी नहीं ऐसा कुछ नहीं है," नीली ने अपनी चाय के छोटे से ग्लास को देखते हुए कहा।

"मैंने वादा किया था कुछ नहीं पूछूँगा।"

"बताने के लिए मेरे पास ऐसा कुछ है भी नहीं।"

जवाब में दिनकर बस हँस कर रह गया। फिर कुछ सोच कर बोला, "मैं लंदन गया था पढ़ाई करने। मेरे सपने कुछ और थे। मुझे जर्नलिस्ट बनना था, BBC के लिए काम करना था। वहाँ रहते हुए मैंने उनके लिए लिखना भी शुरू कर दिया था।"

"फिर? तुम यहाँ क्यूँ आ गए? इस छोटे से शहर में? जहाँ कुछ भी नहीं?" नीली ने जैसे सवालों की लाइन लगा दी।

जवाब में दिनकर कुछ ना बोला। नीली के भोले से चहरे को देख कर वो बस हँस कर रह गया।

दिनकर कोई तीस साल का होगा। उसका शरीर एकदम तंदरुस्त था। लम्बी लम्बी टाँगे, मज़बूत से हाथ, लम्बी गर्दन, और वो चहरा। वो मसूरी इक्स्प्रेस का एडिटर था। उसके आने के बाद अख़बार में जैसे नई जान आ गई थी। उसका काम सब को पसंद था, उसकी महनत किसी से छुपी नहीं थी। लेकिन यह सोचना, कि दिनकर यहाँ नहीं, लंदन में काम करना चाहता था, नीली के लिए मुश्किल था। दिनकर को देख कर लगता था कि वो यहाँ बहुत ख़ुश है।

"लेकिन ऐसा क्या हुआ कि तुम्हें वापिस आना पड़ा?" नीली ने फिर से पूछा।

“शायद जिस वजह से तुम आई हो, वैसी ही किसी वजह से” आख़िरकार दिनकर बोला।

दिनकर का जवाब सुनकर नीली चुप हो गई। इस एक महीने में पहली बार उसे ऐसा लगा कि वो अकेली नहीं है। दिनकर को चाय पीता देख वो सोचने लगी ‘ऐसा क्या हुआ होगा जो दिनकर को यहाँ आना पड़ा? क्या उसने भी किसी को खोया होगा?’

आज से कुछ साल पहले, इन दोनों में से किसी को यह नहीं पता था कि एक छोटे से पहाड़ी शहर में ये दोनों, एक साथ बैठ कर, अपनी अपनी ज़िंदगी में क्या ग़लत हुआ और क्या सही, सोच रहे होंगे। लेकिन कितना अजीब है कि हम लोगों से ख़ुशियों के बजाय दुःख में ज़्यादा पास आते हैं। मुस्कुरहटों से ज़्यादा आँसू हमें अपने दिल का हाल बोलने पर मजबूर करते हैं। और अपने सारे रिश्तों को छोड़ कर, अपने सारे सच भी हम उन अजनबियों के सामने खोल देतें हैं, जिनसे हमारा कोई वास्ता नहीं होता। शायद इंसान सिर्फ़ दिखते ही अलग हैं, अंदर से सब एक जैसे होते हैं।

नीली के दिमाग़ में जैसे कोई बल्ब जल गया। उसे दिनकर अपने से इतना दूर नहीं लगा। उसने आस पास बैठे लोगों को देखना शुरू किया। एक अंग्रेज़ जो अकेला बैठ कर चाय पी रहा था और साथ साथ किताब पढ़ रहा था, वो भी किसी के बारे में सोचता होगा, तीन लड़कियाँ जो अपने फ़ोन में किसी की फ़ोटो देख कर हँसी जा रही थी वो भी, और दुकान के अंदर जो बूढ़ा सा आदमी चाय बना रहा था, वो भी। उसे अचानक ऐसा लगा जैसे यह सब एक ही थे और वो भी उन सभी का एक हिस्सा थी। जैसे उसने समय की उस नदी से, जिसमें सभी बहते जा रहे थे, निकल कर सब कुछ देख लिया हो। उसके मन को एक नई सी ख़ुशी हुई। उसका शरीर में एक हल्कापन आ गया था। वो ऊड़ सकती थी।

“नीली” दिनकर नीली को देख रहा था।

अपना नाम सुन कर नीली एकदम चौंक गयी। उसने दिनकर की तरफ़ देखा और मुस्कुरा दी।

“तुम ठीक हो ना? मतलब ··· सब ठीक चल रहा है ना?”

नीली ने हाँ में सर हिला दिया। और फिर दिनकर को ध्यान से देखने लगी। दिनकर भी उसे देखकर हँसने लगा। दोनों ने शायद एक दूसरे का मन पढ़ लिया था।

“एक दिन मैं जानना चाहूँगी कि वो कौन थी जिसकी वजह से तुम्हें लंदन छोड़ कर मसूरी की गलियों में वापिस आना पड़ा” उसने दिनकर से कहा।

“मैं भी जानना चाहूँगा कि आख़िर इतनी होनहार लड़की को, जो ज़िंदगी में कुछ भी कर सकती थी, इस शाहर में आकर जूझने की ज़रूरत क्यूँ पड़ी” दिनकर ने नीली के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

दिनकर का हाथ बहुत हल्का था। अभय जब नीली के कंधे पर हाथ रखता था तो उसके

बाद उसे अपनी ओर खींच लेता था। फिर अपने सीने से लगा कर उसके बालों को सूंघता था और कहता था, 'शैम्पू कब किया था?"

नीली को यह छोटी सी बात याद आई तो अभय भी याद आ गया। दिनकर का हाथ वापिस टेबल पर जा चुका था और नीली उसके हाथों को देख कर सोच रही थी शायद उसके हाथों को भी कुछ याद आया होगा।

दिनकर का चहरा एकदम गम्भीर हो गया था और वो नीचे देख रहा था।

"आइ एम सॉरी" उसने धीमे से कहा। वो मुझे आदत है, मज़ाक़ में कंधे पर हाथ रखने की, मैंने सोचा नहीं।

"अरे इसमें माफ़ी माँगने की क्या बात है? मुझे तो कुछ अजीब नहीं लगा" नीली ने उसके हाथ पर हाथ रखते हुए कहा।

"नीली!" दिनकर ने नीली की आँखो में देखा, और फिर धीमे से बोला, "शुक्रिया"

"किस बात का?" नीली ने अपना हाथ उसके हाथ के ऊपर से हटाते हुए पूछा।

"आज यहाँ आने का। मेरे साथ बैठ कर सिर्फ़ चाय पीने का। पता है, मुझे याद भी नहीं किसी दोस्त के साथ मैं आख़िरी बार कब बैठ था"

नीली भी आज ठीक थी। ख़ुश होने में शायद उसे बहुत समय लगेगा, लेकिन उसने उस तरफ़ क़दम बड़ा लिया था। आज दिनकर के साथ बैठे बैठे उसे फिर से अहसास हुआ कि उसने क्या खो दिया था। किसी के साथ रहने में जो आराम है, शायद वही लोगों ढूँढते हैं। जब आपको पता है कि कॉफ़ी पीने के लिए, बाहर घूमने के लिए, सिनेमा हॉल में पॉपकॉर्न खाने के लिए, रोने के लिए और हँसने के लिए हमेशा आपके पास कोई इंसान होगा। जो आपका होगा। जिसके बाद आपको किसी के साथ के लिए किसी का मुँह नहीं देखना होगा। शायद यही आराम लोगों को शादी के रास्ते ले जाता है।

काश ये बात नीली को उस रात से पहले समझ आ गई होती, जब उसने अभय को अपने घर से चले जाने के लिए कह दिया था। अभय किसी को पहले भी खो चुका था, इसलिए उसे नीली के साथ रहने का मतलब पता था।

लेकिन नीली को यह बात समझ कैसे आती? वो कभी इतनी अकेली रही ही नहीं थी कि उसे अपना साथ ख़ुद देना पड़े। अकेले खाना बना कर एक प्लेट में डाल कर ख़ुद ही खाना पड़े। शाम को वापिस आ कर ख़ुद ही अंधेरे घर की लाइट जलानी हो और फिर सोते हुए बंद भी करनी पड़े। यह सब चीज़ें उसकी ज़िंदगी में कभी भी नहीं थी। और अगर अभय से उसका रिश्ता टूट ना जाता, तो शायद यह सब उसे कभी पता भी नहीं चलता।

लेकिन अब, जब उसे यह बात समझ आई तो अभय चला गया। ऐसा क्यूँ ज़रूरी है कि

ख़ुशी का रास्ता हमेशा दुखों के बीच से ही हो कर निकलता है?

जब नीली अपने घर वापिस आई तो सुधा आंटी बाहर खड़ी थी।

“आंटी! इतनी ठंड में बाहर क्यूँ खड़ी हो? सब ठीक तो है ना?”

“बेटा मैं बताना भूल गई थी, कल तुमसे मिलने कोई लड़का आया था। बहुत ढूँढ रहा था।”

“कौन?”

“नाम तो याद नहीं बेटा। आज फिर आया था, लेकिन मैंने कह दिया कि तुम बाहर गयी हो। शायद फिर से आए”

नीली के दिल में जैसे एक नई जान आ गई। जैसे सालों की ठंड के बाद अब जा कर एक फूल खिला हो। आख़िरकार अभय ने ग़ुस्सा थूक ही दिया। सब कुछ भुला कर वो उसके पास आ ही गया।

“नीली!” उसे पीछे से आवाज़ आई और उसने पलट कर जो देखा वो उसने सपने में भी नहीं सोचा था।

उसके दिल ने एक बार धक्का खाया और एक दो धड़कनें ग़ायब हो गई।

सामने विक्रम खड़ा था।

थोड़ा बहुत नाटक

“नीली!” जोर से बोलते हुए विक्रम अंदर आया और नीली को अपने सीने से लगा लिया।

ये देखते ही सुधा आंटी अंदर चली गई। नीली को अजीब सी घबराहट हुई। ‘ये क्या हो रहा था?’ उसके मन में जैसे एक आँधी सी चलनी शुरू हो गई।

उसने विक्रम को आख़री बार तब देखा था जब वो उसे दिल्ली में छोड़ कर चला गया था।

वो पाँच साल पहले की बात थी और आज, पाँच साल बाद भी ऐसे लगा जैसे कहानी वही से शुरू हो गई हो। बीच में बस 5 साल का ब्रेक लग गया था। विक्रम ठीक वैसा ही था जैसा नीली को याद था। वही गोरा सा चहरा, उसपर हल्की सी दाढ़ी, वही शराबी आँखें, वही पतले से होंठ, और वही मुस्कुराहट।

एक ही दिन में नीली की दुनिया यहाँ से वहाँ उड़ी चली जा रही थी।

“विक्रम” बहुत मुश्किल से यह नाम उसके होठों पर आया। पाँच साल से वो इस नाम को अपनी ज़बान के नीचे दबाए बैठी थी। उसे पता था, जिस दिन उसने विक्रम का नाम ले लिया, कुछ बहुत बुरा हो जाएगा, जैसे उसको होश आ जाएगा कि विक्रम ने उसे क्यूँ छोड़ा था।

“ओह बेबी!” विक्रम उसे पकड़े रहा, “मैं तुम्हें कब से ढूँढ रहा हूँ। कोई मुझे बताने को तैयार ही नहीं था कि तुम कहाँ हो। फिर आख़िरकार तुम्हारे घर में तमाशा करना पड़ा, तब जा कर तुम्हारी बहन सरस ने बताया।”

“तमाशा? क्या किया तुमने?” नीली ने घबराकर पूछा।

“ऐसा कुछ नहीं बाबू, तू जानती है ना मैं थोड़ा बहुत नाटक कर लेता हूँ”

“थोड़ा बहुत नाटक?” नीली के मुँह से निकला और फिर वो चुप हो गई।

शाम धीरे धीरे ढल रही थी और ठंडी हवाएँ तेज़ हो गई थी। इस सब से बेख़बर नीली कभी विक्रम को देख रही थी कभी सामने ढलते सूरज को। लेकिन आज उस घबराहट के पीछे थोड़ा सा ठहराव भी आ गया था। वो हमेशा सोचती थी कि अगर विक्रम से मिलेगी तो यह कहेगी, वो कहेगी। कितने सवाल पूछेगी, कितना रोएगी। लेकिन आज, जब विक्रम उसके सामने आ कर खड़ा था, नीली उसे कुछ नहीं बोली।

“मुझे अपने घर के अंदर नहीं बुलाओगी?” विक्रम ने नीली का हाथ पकड़ते हुए कहा। नीली ने एक झटके से अपना हाथ खींच लिया।

विक्रम ने अपने हाथ मले और फिर इधर उधर देखने लगा।

“मुझे ठंड लग रही है, जान” विक्रम ने पास आ कर उसकी कमर पकड़ते हुए कहा और उसका हाथ लगते ही जैसे नीली का पूरा शरीर अकड़ गया। उसे विक्रम के पास आने से चिड़ सी हो रही थी। यह सब वैसा नहीं था जैसा उसने सोचा था। वो अभय से प्यार करती थी, इसमें कोई दो राय नहीं थी। लेकिन कहीं ना कहीं वो यह भी चाहती थी कि विक्रम लौट आए। और अब जा कर उसे समझ आ रहा था कि उसकी सोच और असलीयत में कितना फ़र्क़ था।

नीली अपने घर का दरवाज़ा खोल कर बोली, “आ जाओ।”

“वाह नीली! तुम अकेली रह रही हो? मेरी बात आख़िर तुमने मान ही ली ना। एक अकेली लड़की जो ख़ुद कमाती है, और ख़ुद खाती है, अलग ही होती है। मज़ा आ गया” विक्रम अंदर आ कर, सोफ़े पर बैठते हुए बोला।

फिर उसने इधर उधर देखा। नीली के कमरे में किताबें ही किताबें थी। ‘गुड’ उसने एक दो किताबों के कवर देखते हुए कहा। फिर उसने सामने वाले दरवाज़े को देखते हुए पूछा, “बेडरूम किधर है?”

नीली चुप रही।

विक्रम फिर से अपने हाथ मलने लगा। नीली अब भी दरवाज़े के पास ही खड़ी थी। उसे देखते हुए वो बोला, “नीली तुम भी सोच रही होगी मैं अचानक कैसे आ धमका। असल में बात ये हैं, तुम उधर खड़ी क्यूँ हो? यहाँ आकर मेरे पास बैठो ना”

नीली चुप चाप सामने वाले सोफ़े पर बैठ गयी।

“मैं तुमसे माफ़ी माँगने आया हूँ नीली। तुम जानती हो मैंने तुम्हारे अलावा किसी से कभी प्यार नहीं किया।” उसने इधर उधर देखते हुए कहा।

नीली फिर भी कुछ नहीं बोली।

“वो नेहा, वो तो बस, उसने मुझे फँसा लिया था, मैं समझ ही नहीं पाया अचानक क्या हुआ।”

नीली उसे ध्यान से देख रही थी। उसकी आँखों के आस पास लकीरें थी जो नीली को याद नहीं थी। उसका चहरा भी अब पहले की तरह नहीं था। कुछ अजीब था, लेकिन नीली समझ नहीं पा रही थी।

विक्रम बोलता रहा। इन पाँच सालों की सारी ख़बर देता रहा और नीली चुपचाप सुनती रही।

“अब मैं चलता हूँ। रात बहुत हो गयी है, तुम्हें भी सोना होगा” आख़िरकार विक्रम उठा।

“मैं माल रोड पर इस होटल में रह रहाँ हूँ। रूम नम्बर 24” उसने अपनी जैकेट की जेब से होटल का कार्ड निकाल कर नीली को पकड़ा दिया।

नीली ने बिना कुछ कहे उसके हाथ से वो कार्ड ले लिया।

“कल तुम मुझसे मिलने ज़रूर आना नीली। प्लीज़, मैं सब ठीक कर दूँगा। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, यह कभी नहीं भूलना”

“हाँ” नीली उसके परेशान चहरे को देखते हुए बोली। विक्रम ख़ुश हो गया।

“ओह नीली बेबी” उसने नीली को अपने सीने से लगा लिया।

फिर विक्रम चला गया और नीली दरवाज़ा बंद कर के अपने कमरे में आ गई। उसके फ़ोन में घर से 4 कॉल आ रखे थे। लेकिन अभी वो घर पर किसी से भी बात करने के लिए तैयार नहीं थी।

अगर यह सब किसी और दिन हुआ होता तो नीली शायद ख़ुश होती। उसे वो सारे जवाब मिल जाते जो वो इतने सालों से ढूँढ रही थी। किसी और दिन वो इस बात को भूल जाती कि विक्रम उस रात उसे छोड़ कर सिंगापोर नहीं बल्कि दूसरी लड़की के घर गया था।

किसी और दिन, वो समझ जाती कि अगर विक्रम के एक ने दोस्त नीली को यह सच्चाई ना बताई होती तो वो शायद उसे ढूँढते ढूँढते पागल हो जाती।

फिर विक्रम की शादी की बातें उड़ी, लेकिन वो अफ़वाह भी हो सकती थी। फिर सुनाई दिया कि उस लड़की का बच्चा होने वाला है, वो किसी और का भी हो सकता था।

और इतने सालों में एक बार भी विक्रम ने नीली को फ़ोन कर के यह नहीं पूछा, “नीली तुम कैसी हो?” शायद उसकी भी कोई वजह हो सकती थी।

अगर यह कोई और दिन होता, तो नीली विक्रम की सारी ग़लतियाँ भुला कर उसे माफ़ करने को राज़ी हो जाती। लेकिन यह कोई और दिन नहीं था।

उसने पर्दे खोल कर बाहर देखा तो आसमान साफ़ था। तारे इतनी तेज़ भी चमक सकते थे उसने सोचा नहीं था। दूर पहाड़ों पर अभी भी बर्फ़ थी। जो सड़क उसे अपने घर से दिखती थी, उस पर बहुत से सैलानी घूम रहे थे। लड़के लड़कियाँ बाहों में बाहें डाले वही सब बातें कर रहे थे जो सभी करते है।

नीली बहुत देर तक खिड़की के पास खड़ी देखती रही। कितना कुछ हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे एक महीने में एक साल जी लिया हो। जो नीली इस सड़क से ऊपर आई थी और जो नीली आज यहाँ खड़ी थी, उसमें ज़मीन आसमान का फ़र्क़ था।

थोड़ी देर बाहर देखने के बाद, नीली ने अपने कमरे की लाइट जलाई और रेडीओ पर

गाने चला दिए। फिर उसने अपनी पसंदीदा किताब उठाई और बिस्तर में लेट गयी। पढ़ते पढ़ते कब नींद आ गई उसे पता भी नहीं चला।

चाबी

सुबह जब नीली की आँख खुली तो धूप खिली थी। आज ऐसा लगा जैसे जाने कितने सालों बाद उसकी नींद पूरी हुई हो। शरीर जैसे एकदम नया हो गया था।

बिस्तर से उठ कर नीली ने अपने लिए दालचीनी वाली चाय बनाई, ठीक वैसी जैसी उसे पसंद थी। फिर उसने अलमारी में से अपने पीले रंग का ब्लाउस और सफ़ेद स्कर्ट निकाली। ये कपड़े उसने जाने कब से ख़रीद कर रखे थे लेकिन पहनने की हिम्मत ही नहीं हुई थी। कभी उसे रंग बहुत चटक लगता तो कभी स्कर्ट में अपनी टाँगे बहुत मोटी।

नाश्ते में आज उसने पोहा और मीठी खीर बनायी, ठीक वैसी जैसे बचपन में उसकी नानी उसे खिलाया करती थी।

उसके बाद उसने नहाने के लिए पानी गरम किया। पानी में दो बूँदे लैवेंडर के तेल की डालते ही पूरे कमरे में उसकी ख़ुशबू फैल गई। आराम से नहा कर नीली तैयार होने लगी। उसने जब आइने में अपनी शक्ल देखी, तो ख़ुद को देख कर वो मुस्कुरा उठी और फिर कुछ सोच कर उसने अपने बाल खोल लिए।

चहरे पर थोड़ा सा मेक अप लगा कर अब नीली मसूरी इक्स्प्रेस के ऑफ़िस की तरफ़ निकल पड़ी। ऑफ़िस में उसने क़दम रखा ही था कि सबकी नज़रें उसपर आ कर रुक गई। वाक़ई आज नीली कोई और ही लग रही थी। एक ही महीने पहले वो डरी हुई लड़की, जिसके जूतों में पानी भरा हुआ था, और चहरे पर अनगिनत सवाल थे, इस दरवाज़े से अंदर आई थी। आज उसके आत्मविश्वास ने सबको असमंजस में डाल दिया था, और सब यही सोच रहे थे कि क्या ये वही नीली है?

नीली एक एक कर के सबसे मिली। सबका हाल चाल पूछा और बातें करी। फिर वो आख़िर में दिनकर के टेबल के पास आई जो अभी ख़ाली था।

टेबल पर दिनकर के हाथों से लिखी हुई कुछ कविताएँ पड़ी हुई थी।

इससे पहले कि वो उनको उठा कर पढ़ पाती, दिनकर की आवाज़ ने उसे रोक दिया।

“ओह माई गॉड! लूक ऐट यू। आज कहाँ बिजली गिराने जा रही हो मिस नीली साहनी?”

नीली बिना जवाब दिए हुए दिनकर के गले लग गई। पूरा ऑफ़िस वहीं का वहीं रुक गया। दिनकर ने भी उसे कस के पकड़ लिया।

फिर थोड़ी देर बाद उससे अलग होते हुए नीली बोली, “थैंक यू दिनकर। अगर तुम ना होते तो आज मैं यहाँ नहीं होती।”

“प्लेज़र वास आल माइन, मेरी ख़ुशक़िस्मती थी कि मैं नीली साहनी जैसी लड़की से इस छोटे से टूटे फूटे शहर में मिला” दिनकर की आँखों में जो चमक थी, वो नीली ने पहली बार देखी थी।

वो दोनों एक दूसरे को ना जानते हुए भी पूरा पूरा जान गए थे। और किसी बहुत अनोखे तरीक़े से दोनों ने एक दूसरे की मदद भी कर दी थी। यह बात उन दोनों की आँखों में साफ़ थी।

“हम हमेशा दोस्त रहेंगे दिनकर” नीली मुस्कुराते हुए बोली।

दिनकर ने अपना चश्मा ठीक करते हुए कहा, “पक्का”

“और ये कविताएँ किस के लिए हैं, ये जानना अभी बाक़ी है”

इसका जवाब दिनकर ने नहीं दिया। उसके लिए नीली को वापिस आना होगा।

रमेश चाय ले आया और फिर दिनकर के टेबल पर बैठ कर ही नीली ने उससे अपनी सारी कहानी सुनाई। दिनकर बहुत ध्यान से उसकी बातें सुनता रहा और बीच बीच में विक्रम को एक आध गाली भी देता रहा।

कहानी ख़त्म कर नीली ने दिनकर से विदा ली और दीवान चंद से मिलने उनके केबिन में गयी। नीली को आता देख वो खड़े हो गए और दोनों हाथो से नीली का हाथ पकड़ते हुए बोले, “बैठो बेटा।”

“कुछ दिन में ही नीली चली जाएगी” दिनकर ने कल शाम घर आते ही मुझे कहा था।

नीली का दिल यह सुनकर हल्का हो गया। दिनकर वाक़ई उसका दोस्त था।

“क्या यह सच है बेटा?”
“जी हाँ। अब मेरे लिए यहाँ और कुछ नहीं” नीली ने दीवान चंद को देखते हुए कहा।

“बुरा ना मानों तो एक बात कहूँ?” दीवान चंद नीली को देखते हुए आगे बोले, “मैंने कल, बहुत दिनों बाद अपने बेटे को ख़ुश देखा। मैं जानता था, इसमें कही ना कही तुम्हारा ही हाथ है। लेकिन तुम्हारा अचानक जाना। सब ठीक है ना?”

‘शायद दिनकर को भी कल कुछ सवालों के जवाब मिल गए’ नीली ने मन ही मन कहा।

“सब ठीक है” नीली ने दीवान चंद को देखते हुए कहा।

नीली जब उनके केबिन से बाहर आई तो दिनकर को देख कर मुस्कुरा दी। दिनकर भी उसे देख कर हँस रहा था। फिर उसने सबको बताया कि अब वो मसूरी इक्स्प्रेस में काम नहीं करेगी। बल्कि अब वो किसी भी दफ़्तर में काम नहीं करेगी। उसके सपने कुछ और है। और अगर कोई समझदार इंसान उससे ये ना पूछता कि, “इतनी होनहार लड़की इस शहर में क्यूँ झूझ रही है?” तो वो कभी समझ ना पाती कि उसे क्या चाहिए।

ऑफ़िस से निकलने के बाद नीली माल रोड के उस होटल की तरफ़ चल पड़ी जहाँ का पता विक्रम ने उसे दिया था। रास्ते में नीली को एक बग़ीचा दिखा तो उसका मन किया कि अंदर देखा जाए।

बग़ीचे के अंदर क़दम रखते ही ऐसा लगा जैसे रंगो का मेला लग गया हो। कौन से फूल थे जो वहाँ नहीं थे। नीली को फूलों के नाम तो पता नहीं थे, लेकिन वो सबको जानती ज़रूर थी। ये बड़े बड़े पीले वाले, जो उसकी माँ को पसंद थे, ये छोटे छोटे लाल जो उसकी पड़ोस वाली आंटी अपने घर में हमेशा रखती थी, ये पूजा वाले, ये बालों में लगाने वाले और ये शादी वाले। हर फूल का कोई ना कोई महत्व था। हर रंग का कोई ना कोई मतलब था। या फिर ये सब बस इंसान के दिमाग़ की उपज थी?

वहाँ बग़ीचें में काम करने वाली मालिन नीली को देख रही थी। बूढ़ी सी औरत ने नीली को अपने पास बुलाया तो नीली उसके पास जा कर बैठ गई। दोनों बातें करने लगे और मालिन नीली को अलग अलग पौधों के बारे में बताने लगी। फिर वो नीली के लिए चाय बना लाई और पता ही नहीं चला एक घंटा कहा चला गया। जब नीली उस बग़ीचे से बाहर निकली तो उसके बालों में छोटे छोटे सफ़ेद फूल सजे हुए थे। यह शायद उस बूढ़ी औरत का शुक्रिया कहने का तरीका था।

रास्ते में नीली को एक छोटी सी दुकान दिखी जहाँ एक लड़की चूड़ियाँ बेच रही थी। उसने ढेर सारी हरी चूड़ियाँ ख़रीद कर पहन ली। जब वो विक्रम के होटल में पहुँची तो सब उसे देख रहे थे। पर नीली को इस बात से कोई परेशानी नहीं हुई।

विक्रम ने जब अपने कमरे का दरवाज़ा खोला तो नीली को देखता ही रह गया।

“ओह नीली बेबी! तुम तो एकदम परी लग रही हो”

नीली कमरे के अंदर आ कर, ठीक सामने लगे सोफ़े पर बैठ गई। विक्रम उसके पीछे पीछे आते हुए बोला, “बेबी, पानी लाऊँ?

“मुझे बेबी शब्द से सख़्त नफ़रत है।”

विक्रम चलते चलते रुक गया, “मैं समझा नहीं”

“जब तुम मुझे बेबी कहते हो तो मेरे पूरे शरीर में जैसे चींटियाँ चलने लग जाती हैं” नीली ने अपनी बात और सफ़ाई से कही।

“यह क्या बोल रही हो नीली?” कहते हुए विक्रम नीली पास आकर बैठने लगा तो नीली ने सामने वाला सोफ़ा की तरफ़ ऊँगली करते हुए कहा, “वहाँ बैठो”

“क्या००० क्या हुआ? क्या मैंने कुछ ग़लत कहा मेरी नीली?” विक्रम जा कर सामने वाले सोफ़े पर बैठ गया।

“तुम थकते नहीं यार?” कमाल की बात थी कि नीली की आँखों में आज एक भी आँसू नहीं था।

“मतलब? मैं कुछ समझा नहीं”

“मतलब ये नाटक कर के तुम थक नहीं गए? तुम्हें क्या लग रहा था, मैं 5 साल से यहाँ बैठ कर तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी?”

“नहीं नीली, मैंने ऐसा बिलकुल नहीं सोचा, मैं बस तुमसे प्यार करता हूँ और तुम्हारे बिना रह नहीं सकता। ये समझने में थोड़ा सा वक़्त लग गया और कुछ नहीं”

“थोड़ा सा वक़्त?”

“थोड़ा ज़्यादा लग गया नीली पर मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, ओह तुम कितनी सुंदर लग रही हो” विक्रम ने नीली को देखते हुए एक लम्बी साँस ली।

“मेरे जूते का साइज़ क्या है?”

“क्या?”

“मेरा सबसे पसंदीदा रंग कौन सा है?”

“लाल? नहीं हरा? ये सब क्यूँ पूछ रही हो?”

“मुझे खाने में क्या पसंद है विक्रम? मीठा या नमकीन? मैं दुःख में कौन सी मूवी देखती हूँ?

क्या मुझे गाने सुनने पसंद है? क्या मैं लोगों को आसानी से माफ़ कर देती हूँ और फिर सालों तक उनके एक फोन का इंतज़ार करती हूँ? या फिर आसानी से आगे बढ़ जाती हूँ? क्या मुझे वो लड़के अच्छे लगते हैं जो लड़कियों को छोड़ कर एक दिन में ही ग़ायब हो

जाते हैं? बताओ विक्रम”

“नहीं ००० नहीं मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। ये क्या बकी जा रही हो तुम?” विक्रम परेशान होता हुआ बोला।

“तुम तो मुझे जानते भी नहीं विक्रम। प्यार कैसे कर लिया? और ये कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हारे इंतज़ार में बैठी हुई थी? कैसे हिम्मत कर ली तुमने मेरी ज़िंदगी में वापिस क़दम रखने की?”

“मेरी बात तो सुनो नीली” विक्रम की आवाज़ में अब घबराहट थी।

“नहीं विक्रम अब तुम मेरी बात सुनो”

“क्या तुम किसी और से प्यार करती हो नीली?” विक्रम रुआँसा हो कर पूछ बैठा।

“हाँ” नीली ने जवाब दिया।

ये सुन कर विक्रम की शक्ल पर ऐसी लकीरें बन गई जैसे उसको कोई बहुत बड़ा धक्का लगा हो।

“कौन है वो? तुम उससे कब मिली? नीली तुम उससे शादी करोगी क्या? तुम्हें मुझसे अच्छा लड़का नहीं मिलेगा” विक्रम अब बड़बड़ाए जा रहा था।

नीली ने उसको जवाब देना ज़रूरी नहीं समझा। वो उठी और विक्रम का हाथ पकड़ कर बोली,
“जो भी हुआ उसे भूल जाना विक्रम । मैं भी भूल चुकी हूँ। और यहाँ आने के लिए शुक्रिया। जो बात मैं अपने आप से नहीं कह पा रही थी वो तुमसे कह दी। आख़िर हमारा रिश्ता इतना भी बेकार नहीं गया”

जब नीली उस कमरे से बाहर निकली तो उसके चेहरे पर अलग ही चमक थी। आज पहली बार उसे पता था कि उसे क्या चाहिए था। वो डर, वो सभी घबराहट जो कितने सालों से उसके अंदर थी जैसे हवा में उड़ गई।

बाहर निकलते ही सूरज की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी और उसने सूरज की तरफ़ देख कर एक मुस्कुराहट हवा में उड़ा दी।

सड़क पर कुछ बच्चे खेल रहे थे और लोग, बिना नाम वाले लोग, अलग अलग रंग के लोग, सड़क पर चले जा रहे थे। सड़क के किनारे किनारे बौगनविला के गुलाबी फूल चमक रहे थे और तभी एक नीले रंग की चिड़िया, कहीं से उड़ती हुई आई और उन फूलों पर आ कर बैठ गई।